सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ — 226007
फोन : 0522—2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ—226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522—2740406 अथवा ईमेल: **tameer1963@gmail.com** पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अक्तूबर, 2019 वर्ष 18 अंक 08

हर कोई याँ सुखी रहे

भारत प्यारा वतन हमारा विश्व में है यह सबसे न्यारा
मानव सब याँ मिल कर रहते, मानवता की बहती धारा
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बौद्धी जैनी भाई भाई
अपने अपने धर्म पे रहते, धर्म की होती नहीं लड़ाई
लोकतंत्र का राज यहां है शासन है सैकूलर का
हर कोई हक़ अपना पाता, शुक्र है करता ईश्वर का
अनेक यहां पर कलचर हैं, अनेक यहां भाषाएं हैं
फुलवारी के फूल हों जैसे रब ने उन्हें खिलाएं हैं
या रब भारत करे तरक़्क़ी हर कोई याँ सुखी रहे
शांति रहे हर ओर यहां पर, कोई भी न दुखी रहे

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
एक जुमे के खुतबे के चार बोल	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	14
जो दिलों को फत्ह कर ले	मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी	18
बच्चों पर नेक वालिदैन	मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	27
मुसलमान बच्चों और बच्चियों	मौलाना सय्यिद मुहम्मदुल हसनी रह0	30
मुक़द्दिमा	हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी	32
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद–

उसी की बात सच है और उस दिन उसी की बादशाही है जब सूर फूंका जाएगा, छिपे और खुले को जानता है और वह हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला पूरी खबर रखने वाला है(73) और जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा आप मूर्तियों को माबूद (पूज्य) बनाए मैं तो आपको और आपकी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ(74) और उसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन का साम्राज्य दिखाते गए और इसलिए ताकि उनको विश्वास हो जाए(75) फिर जब रात उन पर छा गई तो उन्होंने एक सितारा देखा बोले यह मेरा पालनहार है फिर जब वह गायब हो गया तो कहा कि मैं गायब हो जाने वालों को पसंद नहीं करता(76) फिर जब चमकता हुआ चांद देखा तो बोले यह मेरा पालनहार है फिर जब वह भी गायब हो गया तो कहने लगे अगर मेरे पालनहार ने मुझे रास्ता न दिया तो मैं ज़रूर गुमराह लोगों में हो जाऊँगा(77) फिर जब चमकता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा पालनहार है यह सबसे बड़ा है फिर जब वह भी डूब गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम जिस को भी तुम साझीदार बनाते हो मैं उससे बिल्कुल अलग हूँ(78) मैंने तो अपना मुँह हर ओर से हटा कर उसकी ओर कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और मैं शिर्क (बहुदेववाद) करने वालों में नहीं(79) और उनकी क़ौम उनसे बहस पर आ गई वे बोले तुम मुझ से अल्लाह के बारे में बहस करते हो जबकि वह मुझे रास्ते पर ला चुका है, उसके साथ तुम जिसे भी शरीक ठहराते हो मुझे उस का डर नहीं सिवाए इसके कि मेरे पालनहार ही की कुछ चाहत हो, मेरे पालनहार का ज्ञान हर चीज़ को समेटे हुए है, फिर क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते(80) जिसको तुम साझी ठहराते हो उसका मुझे कैसे डर हो सकता है जबकि तुम्हें इसका डर नहीं कि तुम अल्लाह के साथ साझी ठहराते हो जिसका कोई प्रमाण अल्लाह ने तुम पर नहीं उतारा, अब दोनों पक्षों में कौन ज़ियादा संतुष्ट है

अगर तुम कुछ समझ रखते हो तो बोलो[1](81) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में थोड़ा भी शिर्क को न मिलाया, अमन तो उन्हीं के लिए है और वही लोग हिदायत पर हैं[2](82) और यह वह प्रमाण[3] है जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुकाबले में प्रदान किया, जिसके चाहे हम दर्जों को बुलन्द करें बेशक आपका पालनहार हिकमत वाला खूब जानने वाला है(83) और हमने उनको इस्हाक़ और याकूब प्रदान किए और सबको हिदायत प्रदान की और उनकी संतान में दाऊद और सुलैमान को और अय्यूब और युसूफ़ को और मूसा और हारून को भी और अच्छे काम करने वालों को हम यूँ ही बदला दिया करते हैं(84) और इसी तरह ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास को भी वे सब अच्छे लोगों में थे(85) और इस्माईल और यस्अ् को और यूनुस को और लूत को सब को हमने तमाम जहानों पर श्रेष्टता दी(86) और उनके बाप दादा में से भी (बहुतों को हिदायत दी) और उनकी संतान और उनके भाईयों में से और हमने उनको चुन लिया और उनको सीधे रास्ते पर चलाया(87) यह अल्लाह का बताया हुआ रास्ता है वह अपने बन्दों में जिसको चाहता है इस रास्ते पर चला देता है और अगर वे शिर्क करते तो ज़रूर उनके सारे काम बेकार चले जाते[4](88) इन्हीं लोगों को हमने किताब और शरीयत (क़ानून) और नुबुव्वत (दूतत्व) दी फिर अगर इन चीज़ों को यह लोग न मानें तो हमने इसको मानने के लिए ऐसे लोग नियुक्त कर दिए हैं जो इसका इनकार करने वाले नहीं हैं[5](89) यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह ने रास्ता चला दिया तो आप भी इन्हीं के रास्ते पर चलिए, कह दीजिए के मैं इस पर तुम से बदला नहीं मांगता यह तो सारे जहानों के लिए एक नसीहत (उपदेश) है[6](90)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. पिछली आयतों में तौहीद को नकारा गया था और मुसलमानों के धर्म से फिरने से निराश किया गया था, यहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की घटना से उस पर और ज़ोर डालना मकसद है और साथ साथ मुसलमानों को समझाना है कि झुठलाने वालों और विरोधियों को किस तरह समझाना चाहिए और फिर किस तरह उनसे अलग होने को जाहिर करना चाहिए और किस तरह एक ईमान वाले को केवल अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उनकी क़ौम ने डराया था

शेष पृष्ठ .....10...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

संक्षेप बातः–

हजरत सुफयान बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मुझे ऐसे काम की बात बताइये जिसको मैं मज़बूती से पकड़ लूं, आप ने फरमाया कहो मेरा रब अल्लाह है फिर उस पर कायम रहो, मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप को मेरे लिए सब से ज़ियादा किस चीज़ का खतरा महसूस होता है। आप ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर फरमाय इस से। (तिर्मिजी)

यही, यानी ज़बान ही वह चीज़ है जिस से ज़ियादा तर गुनाह हो जाते हैं, हराम खाने का भी इस से डर है और अल्लाह की नाराजगी के वाक्य के बोलने का भी इस से डर है।

ज़ियादा बोलनाः–

हजरत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम अल्लाह के जिक्र के अलावा ज़ियादा बात न किया करो, ज़ियादा बोलना दिल को सख़्त कर देता है और सख़्त दिल आदमी अल्लाह से बहुत दूर है।

(तिर्मिजी)

सलामती का रास्ताः–

हजरत उक़बा बिन आमिर रज़ि0 से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा या रसूलुल्लाह किस बात से नजात हासिल हो सकती है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपनी ज़बान को रोको, और घर तुम्हारे लिए काफी हो (यानी अपनी ज़बान की बुराई से लोगों को बचाने के लिए घर में बैठे रहना चाहिए) और अपनी गलतियों पर रोया करो।

(तिर्मिजी)

ज़बान की अहमियतः–

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर सुब्ह को इंसान के तमाम अंग जबान के आगे आजिज़ी करते हैं, कहते हैं खुदा के लिए हमारे बारे में अल्लाह से डरो, अगर तू सीधी है तो हम भी सीधे रहेगें, अगर तू टेढ़ी है तो हम भी टेढ़े रहेंगे। (तिर्मिजी)

भलाई के दरवाजेः–

हजरत मुआ़ज रज़ि0 से रिवायत है कि मैं ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मुझे ऐसा अमल बताइये जो मुझे जन्नत का हकदार बना दे और दोज़ख़ से महफूज रखे, आप ने फरमाया तुम ने बड़ी अच्छी बात पूछी है यह काम अल्लाह तआला जिस पर आसान कर दें तो आसान हैं, वह काम यह हैं, तुम अल्लाह की इबादत करो उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ पढ़ो,

शेष पृष्ठ.....13... पर

एक जुमे के खुतबे के चार बोल

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

जुमा हफ्ते के एक दिन का नाम है इसके स्थान पर हिन्दी में शुक्रवार है, जुमा का शुद्ध उच्चारण जुमुअ़ा है लेकिन उर्दू वाले जुमा बोलते हैं। जुमे की नमाज़ जुमे के दिन जुह्र के वक़्त में पढ़ी जाती है, जुह्र की नमाज़ में पहले चार सुन्नत फिर चार फर्ज़ फिर दो सुन्नत फिर दो नफ्लें पढ़ते हैं लेकिन जुमे की नमाज़ में चार सुन्नतों के बाद जुमे की नीयत से दो ही फर्ज पढ़ते हैं लेकिन उससे पहले इमाम दो खुतबे पढ़ता है, जुह्र की नमाज़ के फर्ज़ इमाम सिर्रन (हल्की आवाज़ से) पढ़ाता है अगर जुह्र की जमाअत छूट जाए तो आदमी अकेले भी अदा कर सकता है, जुमे की नमाज़ इमाम जहरन (तेज आवाज़ से) पढ़ाता है अगर जुमे की नमाज़ छूट जाए तो अकेले नहीं पढ़ी जा सकती, जुमे की नमाज़ के लिए जमाअत अनिवार्य है अगर जुमे की नमाज़ छूट जाए तो जुह्र की नमाज़ पढ़ना पडेगी।

जुमे की नमाज़ से पहले दो खुतबे पढ़े जाते हैं, खुतबा भाषण को कहते हैं और दूसरे भाषणों को वअ़ज, तक्रीर या बयान कहते हैं।

दारुल उलूम नदवतुल उलमा की मस्जिद में एक लम्बे समय से दारुल उलूम के सीनियर उस्ताद और मुहतमिम ह़ज़रत मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी पढ़ाते हैं इनका पहला खुतबा अरबों के खुतबे जैसा होता है, 19 जुलाई जुमा के चार बोलों ने मुझे बहुत प्रभावित किया उन्हीं का वर्णन यहां करना चाहता हूँ।

खुतबा या तकरीर के शुरु में अल्लाह की प्रशन्सा, बड़ाई और अल्लाह के नबी पर दुरूद पढ़ा जाता है इसको खुत—बए—मस्नूना कहते हैं। मौलाना ने बहुत अच्छा खुत—बए—मस्नूना पढ़ा फिर अरबी भाषा में इस प्रकार कहना आरंभ किया जिस का भावार्थ हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं:—

(1) मैं आप सबको और स्वयं अपने को तक़्वा, ग्रहण करने का निर्देश देता हूँ।

(2) मैं आप सबको और स्वयं अपने को अल्लाह की रस्सी मजबूती से पकड़ने का निर्देश देता हूँ।

(3) मैं आप सबको और स्वयं अपने को अल्लाह की शरीअत को मजबूती से पकड़ने का निर्देश देता हूँ।

(4) मैं आप सबको और स्वयं अपने को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रकाश तथा स्पष्ट पुस्तक के रूप में जो

अल्लाह की ओर से लाये हैं उन के अनुपालन का आदेश देता हूँ।

श्रवण शक्ति निर्बल होने के कारण शेष खुतबे से पूर्णतः लाभान्वित न हो सका इतना ज्ञात है कि मौलाना ने अपने खुतबे में सूरतुल अस्र एक से अधिक बार पढ़ी और उसकी चार महत्वपूर्ण शिक्षाएं ''अल्लाह पर ईमान, भले काम, एक दूसरे को हक़ की ताकीद, एक दूसरे को धैर्य की ताकीद'' को बार बार दुहराया और उसको अपनाने पर भर पूर जोर दिया।

अब मैं उक्त चारों बोलों अर्थात चारों बातों पर अपने ज्ञान के अनुकूल कुछ प्रकाश डालने का प्रयास कर रहा हूँ।

1. तक़्वा ग्रहण करने की पवित्र कुर्आन में अनेक आयतें हैं मैं यहां ''आले इमरान'' की आयत नं0 102 से मदद ले रहा हूं, अनुवादः ''ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह का डर रखो, जैसा कि उस से डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यू बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो''। तक़्वे का अनुवाद डर या भय से पूरा भावार्थ अदा नहीं होता यह हो सकता है कि अल्लाह की अवज्ञा से अल्लाह की पकड़ से आदमी डरे, किसी सहाबी ने तक़्वे को इस तरह समझाया था कि कांटेदार झाड़ियों के बीच तंग रास्ते से जिस तरह कपड़े समेट कर एक आदमी निकल जाता है उसी तरह एक आदमी अपना जीवन इस संसार की बुराईयों से बचाते हुए बिता ले यही तक़्वा है। हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि तक़्वे का अनुवादः– ''अल्लाह का लिहाज'' से करते थे यह बहुत अच्छा अनुवाद है आदमी जहां तक होश व हवाश में रहे हर काम में यह खयाल करे कि अल्लाह उसे देख रहा है जब आदमी की यह दशा होगी तो वह वही काम करेगा जो अल्लाह को प्रिय होगा और अप्रिय कामों को करने का साहस न कर पाएगा जब उसकी यह हालत हो जाएगी तो इनशाअल्लाह उसकी मौत ईमान ही पर होगी।

2. अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो, अल्लाह की रस्सी से तात्पर्य पवित्र कुर्आन है उसको मजबूत पकड़ने का अर्थ है कि उसमें जिन बातों पर ईमान लाने का आदेश है उन सब को दिल से मान लें जैसे क़ियामत का आना, कर्मों का लेखा जोखा होना, जन्नत, जहन्नम, फिरिश्ते, जिन, शैतान आदि और जो आदेश आए हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, हलाल व हराम, निकाह, तलाक़ आदि को मानना और उनको अमल में लाना अनिवार्य समझें।

3. अल्लाह की शरीअत मजबूती से पकड़ने से तात्पर्य है पवित्र कुर्आन और पवित्र हदीसों में जिन जिन बातों

पर ईमान लाने का आदेश है उन सब पर ईमान लाना और जीवन बिताने के लिए जो जो आदेश हैं उन सब को अपने जीवन में ढालना।

4. अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की ओर से अल्लाह के बन्दों के अमल के लिए नूर की शक्ल में स्पष्ट पुस्तक अर्थात पवित्र कुर्आन के रूप में लाए हैं उन सब पर अमल करना अनिवार्य जानें इस विषय पर इसी अंक में जनाब खालिद सैफुल्लाह रहमानी का लेख "जो दिलों को फत्ह कर ले वही फातिहे ज़माना" को अवश्य पढ़ें।

यहां हम उन चारों बोलों की अरबी लिख देना उचित समझते हैं:–

'ऊसीकुम व नफ्सी बि तक़्वल्लाहि वल–एअ़्तिसामि बि हबलिल्लाहि वत्तमस्सुकि बि शरीअतिल्लाहि वल–अमली बिमा जाअबिही मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिनल्लाहि नूरंव्वकिताबम मुबीना''।

इन चारों बोलों में हर बोल पूरे इस्लाम को घेरे हुए है यह चारों बोल एक दूसरे की तफ्सीर (व्याख्या) है।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा ....

कि तुम हमारे माबूदों का अपमान करते हो तो कहीं पागल न बन जाओ उस पर उन्होंने कहा मैं उनसे क्या डरूँगा जिनके हाथ में कुछ नहीं, डरना तो तुम्हें चाहिए कि तुम उस अल्लाह के साथ शिर्क करते हो जिसके कब्ज़े में सब कुछ है तो अब बताओ वह ज़ियादा संतुष्ट होगा जिसने अपने को अल्लाह से जोड़ा या वह जो खोखले और असत्य माबूदों (पूज्यों) की रस्सी पकड़े हुए हैं।

2. सही हदीसों में स्पष्ट रूप से मौजूद है कि अत्याचार का अर्थ शिर्क है इसीलिए जुल्म का अनुवाद यहाँ शिर्क से लिया गया है।

3. यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वह बातचीत जो ऊपर प्रमाण के रूप में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की ओर से दिया गया था।

4. साफ़ कर दिया गया कि शिर्क इतनी गंदी चीज़ है कि अगर ऐसे ऐसे अल्लाह के निकटतम लोगों में भी ऐसी हरकत हो जाए तो उनके सारे काम बेकार हो जाएं।

5. मक्का के मुश्रिकों ने नहीं माना तो अंसार और मुहाजिरीन लोगों को अल्लाह ने इस काम के लिए लगा दिया वे किसी चीज़ से मुँह नहीं मोड़ते।

6. यह बता दिया गया कि सारे पैग़म्बरों का बुन्यादी तौर पर रास्ता एक ही है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व महब्बत में क़ौम का कल्याण हैः–

हदीसे कुदसी में फरमाया कि "अल्लाह क़ियामत के दिन कहेगा कि आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ था तू मुझे देखने नहीं आया बन्दा कहेगा, परवरदिगार! मैं तेरी अयादत (बीमार को देखने जाना) कैसे कर सकता हूँ? तू तो सारे जहानों का रब है। इरशाद होगा, क्या तुझे ज्ञात नहीं हुआ। मेरा अमुक भक्त बीमार पड़ गया था, तू उसे देखने को नहीं गया। तुझे मालूम नहीं था कि अगर तू उसकी अयादत करता, तो तू मुझे उसके पास पाता। फिर इरशाद होगा, ऐ आदम के बेटे! मैं ने तुझसे खाना मांगा था, तूने मुझे खाना नहीं दिया। बन्दा कहेगा, तू तो सारे जहानों का रब है। इरशाद होगा, क्या तुझे इसकी जानकारी नहीं हुई कि मेरे अमुक बन्दे ने तुझ से खाना मांगा तूने उसे नहीं खिलाया। क्या तुझे इसकी ख़बर न थी कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता? ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझसे पानी मांगा, तूने मुझे पानी नहीं पिलाया। बन्दा कहेगा, ऐ रब! मैं तुझे कैसे पानी पिला सकता हूँ, तू तो सारे जहानों का पालनहार है? इरशाद होगा तुझ से मेरे फलां बन्दे ने पानी मांगा था, तूने उसे पानी नहीं दिया। तुझे इसका पता नहीं चला कि तू अगर उसको पानी पिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता? (सही मुस्लिम)

जो धर्म एक ईश्वर को मानता हो, क्या इन्सानियत की बुलन्दी का इससे बढ़ कर उसमें ऐलान पाया जा सकता है? और क्या दुन्या के किसी मज़हब और फलसफः में इन्सान को यह मक़ाम दिया गया है? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "रहम करने वालों पर रहमान की रहमत होती है। अगर तुम धरती वालों पर रहम खाओगे तो वह जो आसमान पर है वह तुम पर रहम करेगा।" (अबू दाऊद)

करो मेहरबानी तुम अहले जमीं पर
ख़ुदा मेहरबान होगा अर्शे बरीं पर।

आप ग़ौर कीजिए कि इन्सानी एकता की छाप दिलों पर बिठाने के लिए जब यह प्रयास नहीं किया गया था, उस समय इन्सान का क्या हाल रहा होगा? एक इन्सान की तुच्छ इच्छा की क़ीमत हज़ारों इन्सानों से अधिक थी। बादशाह उठते थे और मुल्कों के मुल्कों का सफाया कर देते थे। सिकन्दर उठा और जैसे कोई कबड्डी खेलता है, हिन्दुस्तान तक चला आया और क़ौमों तथा तहजीबों के

चिराग गुल कर दिये। सीज़र उठा और इन्सानों का इस तरह शिकार खेलना शुरु किया जैसे जंगली जानवरों का शिकार खेला जाता है। हमारे ज़माने में भी दो–दो विश्व युद्ध हुए जिन्होंने लाखों इन्सानों को मौत के घाट उतार दिया और यह सिर्फ राष्ट्रीय गर्व, राजनीतिक चौधराहट, सत्ता का लोभ या व्यापारिक मंडियों पर कब्जा करने की भावना का नतीजा था। इकबाल ने सच कहाः–

अभी तक आदमी सैदे ज़बून–ए–शहर यारी है,
क़यामत है कि इन्सां नौए इन्सां का शिकारी है

चौथा इन्क़लाबी कारनामा यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय के समय मानव जाति के अधिकांश लोगों पर मानव स्वभाव से बदगुमानी और खुदा की रहमत से मायूसी व निराशा का एक आम माहौल था। इस मानसिक दशा के पैदा करने में ऐशिया के कुछ प्राचीन धर्म और मध्य पूर्व तथा योरोप की परिवर्तित ईसाई धर्म ने समान रोल अदा किया था। हिन्दुस्तान के धर्मों ने आवागमन के दर्शन शास्त्र के द्वारा जिनमें इन्सान के इरादा व इख़्तियार को कतई दखल नहीं है, और जिसके अनुसार हर इन्सान को अपने पहले जन्म के कर्मो और गलतियों की सज़ा भुगतनी ज़रूरी है। और ईसाइयत ने इन्सान के पैदाइशी गुनहागार होने और इसके लिए हज़रत मसीह के कफ़्फारः (प्रायश्चित) बनने की ज़रूरत के अक़ीदा के नतीजे में उस समय के सभ्य संसार के लाखों करोड़ों व्यक्तियों को जो इन धर्मों के अनुयायी थे, अपने आपसे बदगुमानी और अपने भविष्य और खुदा की रहमत से निराशा से ग्रसित कर दिया था।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूरी ताक़त व सफाई से ऐलान किया कि मानव स्वभाव एक सादा तख़्ती (स्लेट) की तरह है जिस पर पहले से कोई तहरीर लिखी नहीं है, इस पर बेहतर से बेहतर तहरीर लिखी जा सकती है। इन्सान अपने जीवन का स्वयं शुभारम्भ करता है और अपने अच्छे या बुरे कर्म से अपना लोक–परलोक बनाता या बिगाड़ता है। वह किसी दूसरे के कर्म का ज़िम्मेदार या उत्तरदायी नहीं। कुर्आन ने बार–बार ऐलान किया कि आख़िरत (परलोक) में कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकेगा, और यह कि उसके हिस्से में उसी की कोशिश और उसके नतीजे आने वाले हैं। इन्सान में उसकी कोशिश का नतीजा ज़रूर ज़ाहिर होगा और उसका उसको भरपूर बदला मिलेगा।

अनुवादः– *यह कि 'कोई' व्यक्ति दूसरे (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा, और यह कि इन्सान को वही मिलता है, जिसके लिए उसने कोशिश की, और उसकी कोशिश देखी*

जाएगी, फिर उसको पूरा–पूरा बदला दिया जाएगा।

(सूरः अंजज्म 38/49)

इस एलान से इन्सान का अपनी प्रवृत्ति और अपनी क्षमताओं पर वह आत्म विश्वास बहाल हो गया जो बिल्कुल विचलित हो कर डगमगा गया था। वह नये संकल्प और विश्वास तथा उत्साह के साथ अपनी और इन्सानियत की तकदीर चमकाने और अपना भाग्य जगाने के सफर में सक्रिय हो गया।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गुनाहों और भूल–चूक व गल्तियों को एक अस्थायी हालत करार दिया, जिसमें इन्सान कभी–कभी अपनी नादानी, अदूर दृष्टि और काम–लोभ व शैतान के उकसाने से लिप्त हो जाता है। नेक स्वभाविकता, लज्जा इन्सान की प्रवृत्ति का असल तक़ाजा और इन्सानियत का जौहर है। अपनी गलती मानना, उस पर पछताना, ख़ुदा के सामने रो–धो कर अपने कुसूर को माफ करा लेना, और आगे ऐसी गलती न करने का इरादा करना, इन्सान की शराफत और आदम की विरासत है। आपने दुन्या के निराश व टूटे दिल और गुनाहों के दलदल में गले–गले डूबे हुए इन्सानों पर तौबा का ऐसा दरवाजा खोला और इसका इस जोर शोर से प्रचार प्रसार किया कि आपको इस विभाग का दोबारा ज़िन्दा करने वाला कहना सही होगा। इसी आधार पर आपके नामों में एक नाम 'नबी उत्तौबह' (तौबा का पैगम्बर) भी है। आपने तौबा को एक मजबूरी की बात के तौर पर पेश नही किया, बल्कि आपने उसके मर्तबा को इतना बुलन्द किया कि वह आला दर्जे की इबादत और खुदा को राजी करने का ऐसा साधन बन गया कि उस पर बड़े–बड़े अल्लाह के भक्त रश्क करने लगे।

जारी..........

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी ....

रमजान के रोज़े रखो, और खान–ए–काबा की इस्ति–ताअत हो तो हज करो, फिर फरमाया मैं तुम को भलाई के रास्तों की खबर दूं, सुनो रोज़ा ढ़ाल है, (अर्थात यह गुनाह और दोज़ख़ से बचाता है) और सद्का गुनाहों को इस तरह बुझाता है जिस तरह पानी आग को बुझाता है और आधी रात को उठ कर नमाज़ पढ़ना (यानी तहज्जुद की) फिर आप ने कुर्आन की यह आयत पढ़ी अनुवादः उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं और अपने रब को डर और उम्मीदवारी से पुकारते हैं और हमारे दिये हुए में से खर्च करते हैं, तो कोई नहीं जानता जो उनके लिए आंखों की ठंढक छुपा रखी है, उन आमाल के बदले में जो वह करते हैं।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

उ़मर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह0

सन्तति से सम्बोधनः–

अपने सुख तथा आनन्द से कहीं अधिक, मनुष्य को अपनी सन्तति की चिन्ता होती है। सन्तान के भविष्य–निर्माण हेतु मालूम नहीं लोग क्या–क्या कर्म करते हैं, परन्तु हज़रत उमर इब्न अ़ब्दुल अज़ीज रह0 को बच्चों का प्रेम भी सत्यमार्ग से विमुख न कर सका। उनके जीवन भर बच्चों ने बहुत ही कठोर तथा व्यग्र जीवन व्यतीत किया। मृत्यु के समय उनके कुछ निकट सम्बन्धियों ने उन्हें इस दशा पर बहुत लाज दिलायी। समय बहुत नाजुक था, बच्चों की अव्यस्थिता आँखों के सामने थी। नेत्रों में आँसू भर आए किन्तु इस पर भी उन्होंने कोई बात सिद्धान्त के प्रतिकूल न होने दी। बेटों को सम्बोधित करके कहा, ''बच्चों! तुम्हारे पिता के लिए दो मार्ग थे। एक यह कि वह स्वयं दोज़ख़ में चला जाता, लेकिन तुम्हारे लिए सुख तथा आनन्द का प्रबन्ध कर जाता, दूसरा मार्ग यह था कि वह अपने आपको दोज़ख की प्रचण्ड आग से बचाए, चाहे तुम्हारे भविष्यत् सुख में बाधा पड़े। अतः उसने दूसरा मार्ग अपनाया। मैंने तुम्हारे लिए किसी व्यक्ति पर अत्याचार नहीं किया और न तो किसी का धन छीन कर तुम्हें दिया। अब तुम इस अवस्था में हो कि किसी भी वस्तु के अधिकारी का बोझ तुम्हारी गर्दन पर नहीं है। इस प्रकार मैं भी जहन्नम की आग से सुरक्षित रहा और तुम भी क़यामत की पूछ–ताछ तथा उसके बुरे परिणाम से बच गए। जाओ तुम्हें ईश्वर के सिपुर्द किया सज्जनों तथा सदाचारियों का वही सहायक तथा अभिभावक है।''

तथ्य तो यह है कि आपके आचरण ने समस्त राष्ट्र को अत्याचार तथा अन्याय से सुरक्षित कर दिया था। निःसंदेह आप तथा आपका परिवार कष्ट की अवस्था में था, किन्तु सर्वसाधारण का एक–एक व्यक्ति सुख तथा शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहा था।

दास का बयानः–

एक बार आपने दास से पूछा– लोगों की क्या दशा है। कोई कष्ट तो नहीं है? उसने उत्तर दिया, अमीरुल–मोमिनीन सारा देश सुख तथा आनन्द का स्वाद ले रहा है। आपत्ति बस तीन ही प्राणियों पर है। एक आप, दूसरे आपका दास और तीसरे आपका घोड़ा। बस, हम तीन के अतिरिक्त

किसी को दुःख नहीं है। दास का यह कथन सुन कर आपने उसे आज़ाद कर दिया, ताकि वह भी समस्त देशवासियों के समान सुख का जीवन व्यतीत कर सके।

कठोर जीवनः—

परन्तु इतनी सेवा करने पर भी आप सन्तुष्ट न थे। किसी समय आपको चैन न था। हर समय इसी का धड़का लगा रहता कि ईश्वर जाने, शासन—कर्तव्यों का सही मानों में पालन हो भी रहा है अथवा नहीं। खुदा के सामने हाज़िरी और कर्मों के विषय में पूछ—ताछ से हर समय कांपते रहते थे। ख़िलाफ़त के उत्तरदायित्व को संभालने के बाद किसी प्रकार के सुख का स्वाद न चखा। हर समय सोच—विचार तथा प्रजा की चिन्ता में ग्रस्त रहते। आपकी धर्म पत्नी का कहना है कि आपके चिन्तित रहने की यह दशा थी कि कभी मुख पर हंसी न आई।

एक दिन लोगों ने कहा कि कुछ सैर—तफ़रीह़ कीजिए। आपने उत्तर दिया, बताओ तो फिर आज का काम कैसे पूरा होगा। लोगों ने कहा, कल कर लीजियेगा। कहने लगे, एक दिन का काम पूरा होना मुश्किल है तो दो दिन का काम किस तरह पूरा किया जा सकेगा।

पत्नी का कथनः—

कभी—कभी रात को बहुत व्याकुल हो जाते। आपकी धर्मपत्नी फ़ातिमा का कथन है कि कभी—कभी इतना व्याकुल हो जाते कि मैं व्यग्र हो जाती और सोचने लगती कि कहीं ऐसा न हो कि अधिक विकलता तथा वेदना के कारण प्राण छूट जायँ और प्रातः मुसलमान इस दशा में उठें कि उनका कोई ख़लीफ़ा न हो।

उत्तरदायित्व का आभासः—

एक दिन सायंकाल आप व्याकुल अवस्था में सिर झुकाये बैठे थे। उनकी इस व्यग्र अवस्था को देख कर बीबी पास गई और पूछने लगी, क्या हाल है? आपने कहा, फ़ातिमा, तुम अपना काम करो, तुम्हें किस बात की चिन्ता। परन्तु सुशील पत्नी ने कहा, शायद मैं भी आपके दुःख में सम्मिलित हो सकूँ और उस कार्य में हाथ बटा सकूँ। अतः मैं इस शोक तथा संताप का कारण जानना चाहती हूँ। यह सुन कर आपने अपने ह्रदय—पीड़ा का इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया—

"ख़िलाफ़त ने मुझे एक लम्बे—चौड़े तथा विस्तृत भूखण्ड का अधिकारी बनाया है। सहस्रों मील के क्षेत्र में करोड़ों मनुष्य फैले हुए हैं, उनमें कोई भूखा है कोई प्यासा, कोई किसी परेशानी में ग्रस्त है और कोई शत्रुओं के चंगुल में गिरफ़्तार है। अर्थात मालूम नहीं कि इन करोड़ों व्यक्तियों में कौन किस मुसीबत में फँसा है। मुझ पर इन सब लोगों के आराम तथा सुख, शिक्षा—दीक्षा तथा पालन—पोषण और उनकी देख—रेख की जिम्मेदारी है। एक ओर अल्लाह के बन्दे हैं और

दूसरी ओर उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत है। कल क़यामत में अल्लाह तआला अपने बन्दों के बारे में प्रश्न करेगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत के विषय में पूछेंगें। मालूम नहीं मैं इस पूछ–ताछ में सफल भी हो सकूंगा या नहीं। उत्तरदायित्व बहुत कठिन है और उसकी पूछताछ अति उग्र। यदि प्रजा की देख–रेख में मुझ से किसी प्रकार की त्रुटि या आसावधानी हुई तो खुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने कोई उत्तर न देते बन पड़ेगा। फ़ातिमा! जब मैं क़यामत के दिन के आतंक की कल्पना और इस महान उत्तरदायित्व का ध्यान करता हूँ, जो मेरी गर्दन पर है, तो हृदय कांपने लगता है और चित व्याकुल हो उठता है। इस समय जो दशा तुम मेरी देख रही हो यह इसी अनुभूति के परिणाम स्वरूप है।''

एक दिन पत्नी को सम्बोधित करके कहने लगे, ''फ़ातिमा! आजकल के मुक़ाबले में पहले का जीवन कितने मज़े का था। हर प्रकार के सुख तथा आनन्द की सामग्री उपलब्ध थी।'' यह सुन कर पत्नी ने उत्तर दिया– ''परन्तु, आज आपको उससे कहीं अधिक अधिकार प्राप्त हैं। उस समय तो आप केवल एक ही प्रान्त के गवर्नर थे लेकिन आज समस्त राष्ट्र आपके हाथ में है। जिस तरह जी चाहे आराम कर सकते हैं, कोई रोक–टोक करने वाला नहीं है।'' पत्नी का यह कथन सुन कर बोले, ''यह बात नहीं है। उस समय और इस समय की परिस्थितियों में बड़ा अन्तर है। तुम केवल यही देख रही हो कि मैं समस्त राष्ट्र का शासक हूँ, लेकिन ज़रा उस उत्तरदायित्व की भी तो कल्पना करो जो शासन– प्रबन्ध के कारण मेरे सिर पर है। मैं क़यामत में पूछ–ताछ के भय से काँपता रहता हूँ। यदि मैंने अपने स्वामी की अवज्ञा की तो एक बड़े दिन के दण्ड से डरता हूँ।''

अमुस्लिमों के साथ व्यवहारः–

आप गत पृष्ठों में कुछ सच्चे मुसलमान शासकों की दया तथा प्रेम और जनता के साथ सहानुभूति तथा संवेदना की कुछ घटनाओं के बारे में पढ़ चुके हैं। इनका यह व्यवहार विशेष रूप से केवल मुसलमानों के साथ न था बल्कि उनके सेवा भाव के सामने मुस्लिम तथा गैरमुस्लिम में कोई भेद न था। हाकिमों की दृष्टि में समस्त प्रजा एक समान थी। जो लोग भी उनके राज्य में रहना पसन्द करते थे वह उनकी रक्षा करने और उन्हें हर प्रकार के सुख पहुंचाने के ज़िम्मेदार होते थे और बहुत ही जटिल परिस्थितियों में भी वह उनकी जान–माल तथा मान मर्यादा की रक्षा करते थे। अल्लाह और उसके रसूल की दृष्टि में गैरमुस्लिमों की रक्षा करने

तथा उन्हें सुख पहुंचाने की ज़िम्मेदारी इतनी महत्वपूर्ण है कि इस्लामी शरीअ़त ने उन्हें अहले ज़िम्मा अथवा ज़िम्मी से सम्बोधित किया है अर्थात् वे लोग जिनकी जान–माल तथा मान–मर्यादा की ज़िम्मेदारी इस्लामी हुकूमत ने अपने सिर ले ली है। ह़दीसों में ज़िम्मियों के अधिकारों की रक्षा करने की चेतावनी दी गई है और खुल्फ़ा–ए–राशिदीन ने अपने आचरण द्वारा इसका उत्कृष्टतम आदर्श भी हमारे सम्मुख प्रस्तुत कर दिया था। मुसलमानों को ताकीद थी कि ज़िम्मियों के साथ किसी प्रकार की ज़ियादती न करें।

वचन पालनः–

सीस्तां प्रान्त की विजय के अवसर पर वहां के निवासियों ने एक वचन लिया था, कि उनकी खेती सुरक्षित रखी जाये। इस वचन का पालन मुसलमानों ने इस उग्रता से किया कि अगर कभी सेना उधर से गुज़रती अथवा साधारणतः मुसलमान किसी आवश्यकता वश उस ओर निकल जाते तो इस प्रकार दामन बचा कर जल्दी से गुज़रते कि कोई पत्ती भी हिलने न पाती थी।

क्षमा तथा अनुकंपाः–

यदि कोई मुसलमान किसी ग़ैरमुस्लिम को किसी प्रकार की हानि पहुंचाता तो उसे कठोर दण्ड मिलता था और उसकी क्षतिपूर्ति की जाती थी और क्षमा एवं प्रेम से काम लिया जाता था।

अति उत्तेजना के उपरान्त भी क्षमा कर देने की चेतावनीः–

एक बार मिस्र के एक ईसाई ने हज़रत अर्फ़ा नामी एक मुसलमान के सामने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में कुछ अनिष्ट तथा अश्लील शब्द प्रयोग किये उनसे धर्य न हो सका, क्रोध में आ कर उसे एक तमाचा रसीद कर दिया। उस ईसाई ने मिस्र के हाकिम हज़रत अम्र इब्न आस रज़ि0 से उन साहब की शिकायत की। उन साहब ने सारा वृत्तान्त सुनाया किन्तु हज़रत अम्र इब्न आस रज़ि0 ने फिर धीरज से काम लेने को कहा और जिम्मियों के साथ सद्व्यवहार का स्मरण कराया जिसका मुसलमानों ने उनको वचन दिया है। मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खुल्लमखुल्ला तिरस्कार एक मुसलमान के लिए असहनशील है, अतः हज़रत अर्फ़ा रज़ि0 ने कहा, उनको इस प्रकार किसी के दिल को ठेस पहुंचाने की अनुमति नहीं दी गई है। हाँ, हमने इसकी ज़िम्मेदारी ली है कि उनकी रक्षा करें, यदि कोई शत्रु उन पर आक्रमण करे तो उनकी ओर से मुक़ाबला करें, उन पर कोई ऐसा भार न डालें जिसको वह सहन न कर सकें। उन्हें अपने तरीक़े के अनुसार उपासना करने का अधिकार है। गिर्जों के अन्दर वह जिस तरह चाहें अपने विचार प्रकट करें, हम किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करेंगे।

❖❖ ❖

जारी.............

जो दिलों को फ़त्ह कर ले वह फ़ातिहे ज़माना
(जो दिलों को जीत ले वही जग विजयी)

–मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी

हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

अगर सूरज की चिलचिलाती हुई धूप मनुष्य को बेचैन कर रही हो तो उस वक़्त कोई बुद्धिमान मनुष्य हीटर नहीं जला सकता, वह तो ए0सी0 और कूलर ही में अपने लिए सुकून तलाश करेगा, अगर कहीं आग लग गई हो तो उसको बुझाने के लिए और आग के अंगारे नहीं फेंके जाते, अपितु आग पर पानी डाला जाता है, इसी प्रकार अगर वातावरण में घृणा की आग लगा दी गई हो तो उसे प्रेम की ओस ही से बुझाना पड़ेगा, अगर घृणा का उत्तर घृणा से दिया जाये तो घृणा बढ़ती जायेगी। विद्यमान परिस्थिति में उम्मत को इस रहस्य को समझने की आवश्यकता है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने संकेत करते हुए पवित्र कुर्आन की सूरे फुस्सिलत की आयत 34 में फरमाया, अनुवाद "अगर बुरे सुलूक का जवाब अच्छे सुलूक से दो गे, तो दुश्मनी गहरी दोस्ती में तब्दील हो जायेगी"।

दुन्या के मौजूदा माहौल में मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वह कुर्आन मजीद की इस हिदायत को सामने रखें, और अपनी अमली ज़िन्दगी को इसका नमूना बनायें।

इस में कोई संदेह नहीं कि इस्लाम का संबन्ध पूरी दुन्या के मुसलमानों को एक दूसरे से जोड़ता है और उसको ऐसा विश्वव्यापी परिवार बना देता है, जिस के अन्तर्गत आने वाले सारे लोग एक शरीर के अंग बन जाते हैं, दुन्या के किसी कोने में एक मुसलमान पर कोई विपदा आये तो जरूरी है कि दुन्या के दूसरे किनारे पर बसने वाला मुसलमान अपने भाई की पीड़ा की टीस का आभास करे, अगर एक शख़्स अपने आप को मुसलमान कहता है और अपने भाई की पीड़ा को महसूस न करे तो उसके ईमान में खोट है, लेकिन इस्लामी भाई चारा के साथ साथ एक और संबन्ध मानवीय भाई चारे का भी है, इसका क्षेत्र और भी बड़ा है जो पूरी मानवता को अपने अन्दर समोए हुए है। इस को पवित्र कुर्आन में हम को बताया है कि सारी दुन्या के मानव एक माँ–बाप आदम तथा हव्वा की सन्तान हैं इस प्रकार समस्त मानव एक परिवार के हैं, और हर मनुष्य दूसरे मनुष्य का भाई है। विचार तथा विश्वास रंग तथा रूप, शक्ति तथा योग्यता के हजार अन्तर के होते हुए

सब का एक ही खून है। जो उन सबके अस्तित्व में दौड़ रहा है, इस संबन्ध को भी हमें भुलाना नहीं चाहिए।

शरीअत के कुछ आदेश ऐसे हैं जो केवल मुसलमानों से संबन्ध रखते हैं, जैसे किसी मुसलमान लड़के या लड़की का निकाह किसी गैर मुस्लिम से नहीं हो सकता, गैर मुस्लिम का ज़बीहा मुसलमानों के हक़ में हलाल नहीं है, इस्लामी इबादात मुसलमानों से मुतअल्लिक हैं, नमाज़, रोज़े, मुसलमानों ही पर फर्ज़ हैं, कोई गैर मुस्लिम मुसलमानों का इमाम नहीं हो सकता, ज़कात मुसलमान ही से ली जायेगी और उन्हीं के गरीबों पर खर्च की जायेगी, हज की इबादत मुसलमानों ही पर फर्ज़ है, लेकिन इन आदेशों के अतिरिक्त बहुत से आदेशों में मुस्लिम और गैर मुस्लिम में अन्तर नहीं किया गया है।

शिक्षण तथा प्रशिक्षण, क्रय–विक्रय, नौकरी तथा मजदूरी, किरायादारी, सामाजिक संबन्धों आदि में मुसलमान और गैर मुस्लिम समान हैं, इस्लाम में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है कि मस्जिद अथवा मदरसा में कोई गैर मुस्लिम भाई क़दम न रखे, ईद व बकरईद की खुशियों में उनको कोई उपहार न प्रस्तुत किया जाये, और इफ्तार तथा वलीमा में उनको न बुलाया जाये।

जो कुछ अन्तर है, वह इबादात और पर्सनल्ला में है, नैतिकता तथा व्यवहारों में मुस्लिम तथा गैर मुस्लिम में कोई अन्तर नहीं है, सामाजिक संबन्ध तथा मेल मिलाप और प्रेम भाव में मुस्लिम और गैर मुस्लिम समान हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हीं दो मार्गों से दुश्मनों के दिलों को जीता, व्यवहारों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाल यह था कि आप मक्के वालों के तंग करने यहां तक कि जान के पीछे पड़ने के सबब मक्के से मदीना रवाना हो रहे हैं, जिस मकान में आप रह रहे हैं, उस के चारों ओर नंगी तलवारें लिये हुए लोग, घर से निकलने वाले का सर काटने के लिए तैयार हैं, लेकिन जाते जाते उन्हीं दुश्मनों की धरोहरें (अमानतें) हज़रत अली रज़ि0 के हवाले की जाती हैं कि मक्के के काफिरों और मुशरिकों को वापस कर दें, बद्र की लड़ाई के अवसर पर मुसलमानों की संख्या दुश्मनों के मुकाबले में खासी कम है, एक एक सिपाही का महत्व है, दुश्मन की फौज के पीछे से हज़रत हुजैफा बिन यमान रज़ि0 और एक सहाबी आते हैं, मक्के वालों ने उन से वचन ले लिया कि वह मुसलमानों के साथ लड़ाई में शरीक न होंगे, वह वहां से बढ़ कर

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, वह चाहते हैं कि वह इस लड़ाई में भाग लें, और मक्के वालों ने दबाव डाल कर जो वचन लिया है उसे तोड़ दें परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया कि तुम अपना वचन पूरा करो, हमारे लिए अल्लाह की मदद पर्याप्त है, क्या व्यवहार की स्वच्छता का ऐसा कोई उदाहरण मिल सकता है?

अच्छे व्यवहार की एक प्रतीक यह है कि फाके हो रहे हैं पेट पर दो दो पत्थर बंधे हुए हैं दो दो महीने इस तरह बीत जाते हैं कि घर में चूल्हा नहीं जलता, जिस वक़्त देहान्त हुआ उस वक़्त भी आप की कवच एक यहूदी के यहां गिरवी थी, यह उस नुबूवत के बादशाह का हाल था जिसका शासन जजीरतुल अरब की सीमाओं को पार कर रहा है, और मदीने में कितने धनवान यहूदी और मुसलमान मौजूद हैं, अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक संकेत कर देते तो मदीने के धनवान मुसलमान अपना धन आपके कदमों में डाल देते, यहूदियों का धन भी लिया जा सकता था परन्तु आपने कभी अन्याय न किया और अपने व्यवहार को हर प्रकार के अत्याचार से दूर रखा, कभी किसी कर्ज़ देने वाले ने कर्ज वापस मांगने में सख्ती की तो उस को भी सहन किया और अगर आपके किसी साथी ने सख्ती करने वाले को झिड़कना चाहा तो आपने रोक दिया और फरमाया कर्ज़ देने वाले को अपना कर्ज वापस मांगने का हक़ हासिल है, ''हक़ वाले को उस के मांगने पर उस का जवाब सख्ती से देना ठीक नहीं है बल्कि उसके हक़ को अदा करना है।''

(तिर्मिजी, हदीस 1317)

मुसलमानों का कर्तव्य है कि वह अपने व्यवहार में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीकों को अपनाएं, इस समय परिस्थति यह है कि लोग मुसलमानों से व्यवहार करने में रुचि रखने के बजाये उन से बचते हैं अपितु खौफ़ खाते हैं, कोई मकान का मालिक हो तो वह किसी मुसलमान को किरायादार बनाना नहीं चाहता, गैर मुस्लिम टैक्सी वाले मुसलमान महल्लों की सवारी लेने से घबराते हैं कि वह किराया देने में झगड़ते हैं, ग्राहक को मुसलमान से माल खरीदने में डर लगता है कि पता नहीं किस बात में वह धोखा दे दे। बैंकों का हाल यह है कि वह मुसलमान महल्लों के लोगों को कर्ज़ देने से बचते हैं, मेरे निवास स्थान के निकट एक मुसलमान ने टाटा का शोरूम खोला उनका बयान है कि टाटा के जितने शोरूम हैं सब लाभ में हैं लेकिन मैं भारी हानि उठा

रहा हूँ, इसलिए कि यह मुस्लिम क्षेत्र में है, बैंक इसमें फाईनेंस करने को तैयार नहीं होता, इसलिए कि लोग समय पर पैसा अदा नहीं करते, और पैसा सख़्ती से मांगा जाये तो लड़ने को तैयार हो जाते हैं, जब तक हम अपने व्यवहार द्वारा इस भ्रांति को दूर करने में सफल न होंगे तब तक हम अपनी इस बे एतिमादी (अविश्वास) के वातावरण को बदल नहीं सकते, इसलिए मुसलमान व्यापारियों, ग्राहकों, मकान मालिकों, किरायादारों, डॉक्टरो, इन्जीनियरों, विभिन्न व्यवसायों से संबन्ध रखने वाले माहिर विशेषज्ञों, कलाकारों, गुरूजनों, छात्रों, शिक्षण संस्था वालों, सरकारी कर्मचारियों, तथा प्राइवेट संस्थाओं के सेवकों, राजनीतिक नेताओं तथा सामाजिक सेवकों, इन सब मुसलमानों को अपना अपना निरीक्षण करना चाहिए कि वतनी भाईयों के साथ उनके व्यवहार कैसे हैं, कहीं उनका दुर्व्यहार पूरी उम्मत को अपमानित करने तथा इस्लाम को बदनाम करने का साधन तो नहीं बन रहा है?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब सफा पहाड़ी पर चढ़ कर अपनी नुबूवत का एलान किया तो पहले अपनी जीवनी को प्रस्तुत किया कि मैंने तुम्हारे बीच अपना बचपन और अपनी जवानी बिताई है, और चालीस वर्ष बिताये हैं, तुम ने मुझ को न्यासधार पाया अथवा न्यासभंजक? सच्चा पाया अथवा झूठा? सबने एक ही उत्तर दिया कि आप सच्चे तथा न्यासधारी हैं आपने उन की एक और परीक्षा ली और पूछा अगर मैं कहूँ कि इस पहाड़ी के पीछे शत्रु की एक सेना खड़ी है तो क्या तुम इस का विश्वास करोगे? उत्तर मिला "क्यों नहीं"? आपने कभी झूठ नहीं कहा, यद्यपि ऐसे हालात नहीं हैं कि समझ में आए कि दुश्मन चढ़ाई करने वाला है लेकिन आप झूठ नहीं बोलते इसलिए आपकी बात मानेंगे। (सहीह मुस्लिम, हदीस 355 का भावार्थ)

आज इसी बात की आवश्यकता है कि गैर मुस्लिम महल्लों में रहने वाले और गैरमुस्लिम भाईयों से कारोबारी संबन्ध रखने वाले मुसलमान यह कह सकें कि मेरा जीवन तुम्हारे बीच बीता है, क्या तुम ने मुझे झूठ बोलते और धोखा देते हुए देखा है? अगर हमारा स्वभाव इस स्तर पर आजाये तो कोई रुकावट नहीं कि हम घृणा की इस दीवार को गिरा देने में सफल न हों, वह दीवार जो लोगों की ओर से बनायी गई है और उसे बराबर सुदृढ़ किया जा रहा है।

दूसरी बात ध्यान देने की सदाचरण की है अर्थात सामाजिक जीवन में हमारा

स्वभाव वतनी भाईयों के साथ मेल मिलाप, प्रेम भाव, सदाचरण, और सहानुभूति और उदारता का हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब नुबूवत प्रदान की गई तो आप घबराये हुए अपने घर आये, इस अवसर पर आपकी प्रिय पत्नी हज़रत खदीजा ने अपने को सांत्वना देते हुए कहा ''खुदा की कसम अल्लाह हर गिज़ आप को जाये (विनष्ट) नहीं करेगा, इसलिए कि आप संबन्धियों से सद्व्यवहार करते हैं, लोगों का बोझ उठा लेते हैं। आप मुहताजों को रोजगार से लगाते हैं, आप अतिथियों की सेवा करते हैं, तथा पीड़ितों की सहायता करते हैं''।

(बुखारी, हदीसः3)

यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आचरणों का उत्तम चित्रण है, जो परिवार के ऐसे साक्षी के मुख से है, जो दिन के उजाले में भी आप को देखता था, और रात के अंधेरे में भी, और सुख में भी और दुख में भी, समृद्ध में भी और निर्धन्ता में भी, यहां हज़रत खदीजा ने आपके जिन आचरणों का वर्णन किया उनका संबन्ध केवल मुसलमानों से नहीं है अपितु गैरमुस्लिमों से भी है।

नुबूवत मिल जाने के बाद भी गैर मुस्लिमों के साथ आप का ऐसा ही सद्व्यवहार रहा, मक्का विजय होता है, दस हजार प्राण निछावर करने वाले आपके एक संकेत पर सब कुछ करने को तैयार हैं, जिन लोगों ने आपका और आपके परिवार का बाईकाट किया था, आपको जादूगर और दीवाना कहा था, आपके कत्ल की योजनाएं बनाई थीं आप पर ईमान लाने वालों को तपती रेत पर घसीटा था, दहकते अंगारों पर लिटाया था, यह सब आपके सामने थे आप की दया और कृपा देखिए कि आपने अपने उन पिछले कष्टों को याद दिला कर मक्के वालों को लज्जित नहीं किया, यहां तक कि उनको क्रोध की दृष्टि से भी नहीं देखा, केवल यह पूछा कि तुम मुझ से क्या आशा रखते हो? लोगों ने उत्तर दिया आप सुशील भाई हैं तथा सुशील बाप के बेटे हैं, यह उन लोगों की ओर से आपके उच्च आचरण वाले तथा महादयालू होने का स्वीकरण था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आज मैं तुम से वही कहूँगा जो हज़रत यूसुफ अलै0 ने अपने भाईयों से कहा था कि तुम सब आज़ाद हो, तुम पर कोई पकड़ नहीं।

(अस्सुननुल—कुबरा हदीसः 18739)

क्या अच्छा हो कि आज भी मुसलमानों का ऐसा स्वभाव हो कि मुसलमानों की जिस आबादी और मुसलमानों के जिस समूह के विषय में गैर मुस्लिमों से पूछा जाये

तो वह लोग उत्तर दें कि यह तो सज्जन लोग हैं।

तो पवित्र कुर्आन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जो गैर मुस्लिम तुम से लड़े नहीं हैं, तुम को घर से निकाला नहीं है तुम को उन के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए, और उनके साथ न्याय करना चाहिए।

(अल–मुमतहिनाः 8)

उनका खून हमारे खून की भांति सम्मान योग्य तथा उनका माल हमारे माल की भांति सुरक्षा योग्य है।

(नसबुर्रायाः 4/16)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गैर मुस्लिमों को अपने यहां आमंत्रित किया, आपने उन से वलीमा के भोज में शरीक होने की इच्छा की, गैर मुस्लिमों ने जब आप को आमंत्रित किया तो आपने स्वीकार किया, उनको अपना अतिथि बनाया, गैर मुस्लिमों के साथ व्यापार किया, उनको अपनी मस्जिद में ठहराया है गैर मुस्लिमों की आखिरी रस्मों और जनाजे में जाने की अनुमति दी है, सिर्फ उन के लिए मगफिरत की दुआ करने से रोका गया है। फुक्हा ने गैर मुस्लिमों की ताजियत (शोक प्रकटीकरण) की अनुमति दी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गैर मुस्लिमों की इयादत की है, गैर मुस्लिमों की माली मदद की है, जब मक्के में सूखा पड़ा तो आप ने मदीने में उनके लिए रिलीफ एकत्र करके उनको पांच सौ दीनार भेजे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही नहीं कि उनके लिए हिदायद की दुआ की अपितु जब मक्के में कहत पड़ा तो क़हत (सूखा) दूर होने की भी दुआ की, अगर गैर मुस्लिमों पर अति हुआ और उन्होंने आप से सहयोग मांगा तो आपने उन को सहयोग दिया, अगर आप के पास किसी गैर मुस्लिम और मुस्लिम का मुक़द्दमा आता तो आप न्याय के साथ उसका निर्णय करते, अतएव आपने बाज़ मुक़द्दमात में मुसलमान के विरुद्ध तथा गैर मुस्लिम के हक़ में निर्णय सुनाया, पवित्र कुर्आन में है कि गैर मुस्लिमों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उनके पूजा स्थलों का अपमान न किया जाये उनके देवी देवताओं को बुरा न कहा जाये।

(अल अनआमः 108)

कुर्आन व हदीस में जितने व्यवहारिक आदेश हैं जैसे निर्धनों का सहयोग, बड़ों का सम्मान, छोटों पर दया, पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार, नारियों का सम्मान, किसी की हंसी उड़ाने से बचना, यह सारे आदेश मुस्लिम और गैर मुस्लिम के लिए समान हैं, इस्लाम की व्यापक कल्पना को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रकार

शेष पृष्ठ .....31...पर

बच्चों पर नेक वालिदैन के असरात

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

हमारी माओं और बहनों को यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि उनकी आदतों, खस्लतों, तर्जे ज़िन्दगी और गुफ़्तगू के असरात लाज़िमी तौर पर बच्चों के मासूम दिल व दिमाग में परवरिश पाते हैं और धीरे धीरे उनमें पुख़्तगी आ जाती है। अगर मायें और बहनें खुद नेक होंगी और उनकी निगाह और दिल पाक होंगे, उनकी ज़िन्दगी साफ़ सुथरी होगी, और उनके आमाल अच्छे होंगे तो यक़ीनन बच्चे भी ऐसे ही पाक व साफ और अच्छे होंगे और वह कौम व मिल्लत का सरमाया होंगे।

उन्हीं अच्छी माओं ने बड़े बड़े उलमा, इस्लाम के सिपाही और मिल्लते इस्लामिया के लिए क़ाबिले फख्र फरजन्द दिये जिन से इस्लाम की दीनी व इल्मी तारीख आज तक रोशन है, और उनमें से हर एक की हैसीयत मना—रए—नूर की है। और उन मुम्ताज़ अफराद की फहरिस्त अगर बनाई जाये तो क़लम की रोशनाई खुश्क हो जायेगी और सब नाम तहरीर में न आ सकेंगे।

यह सिलसिला सदियों तक चला और जब तक इस्लाम के उसूलों पर हमारी मायें चलती रहीं, ऐसे रोशन सितारे पैदा होते रहे लेकिन जब से इस्लामी तहज़ीब की जगह मगरिबी तहज़ीब ने ली और बद अख़्लाक़ी व बेहयाई का तूफान अपने साथ लाई, फुहश लिट्रेचर, उरयाँ किताबें नाविल और अफ़्साने घरों में दाखिल हुए तो उन्होंने दिल व दिमाग़ की मुअत्तर दुन्या को उलट कर रख दिया, और दीन के बजाये बे दीनी, हया के बजाये बे हयाई व बेशर्मी, अल्लाह के जिक्र के बजाय दुन्या की फिक्र, ईमानदारी के बजाये बे ईमानी और हिर्स व हवस ने डेरे डाल दिये।

आज हालत यह है कि सुब्ह के वक़्त मुसलमान महल्लों से गुज़रें तो जहाँ पहले घर—घर से तिलावते कुर्आन मजीद की आवाज़ आती थी वहाँ फिल्मी गानों की सदायें आती हैं और जहाँ जिक्रे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होता था वहां अब हर वक़्त दौलत की बातें होती हैं, इसके बाद भी हम अपनी इस्लाह की फिक्र करने के बजाये अल्लाह तआला की रहमत न आने का शिक्वा करते रहते हैं, ख़ुदा के लिए अल्लाह की तरफ़ लौटो और शैतान से मुँह मोड़ो।

❖❖❖

आप के प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः पाँचों वक्तों की नमाज़ों में सुन्नते मुअक्किदा कौन कौन सी हैं और सुन्नते गैर मुअक्किदा कौन कौन सी हैं?

उत्तरः फ़ज्र की नमाज़ में दो फर्ज़ों से पहले दो रकअ़त नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा हैं, इस की बड़ी ताकीद है अगर किसी वजह से फर्ज़ से पहले न पढ़ी जा सके तो चाहिए कि सूरज निकलने के बाद इन को अदा करें अलबत्ता अगर अन्देशा हो कि सूरज निकलने के बाद न पढ़ सकेंगे तो फर्ज़ अदा करने के बाद एक किनारे हो कर यह सुन्नतें पढ़ लें। ज़ुह्र की नमाज़ में चार फर्ज़ों से पहले चार रकअ़त और फर्ज़ों के बाद दो रकअ़त सुन्नते मुअक्किदा हैं। अस्र में फर्ज़ों से पहले चार रकअ़त नमाज़ सुन्नते गैर मुअक्किदा है। मगरिब में फर्ज़ों के बाद दो रकअ़त नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा हैं। इशा में फर्ज़ों से पहले चार रकअ़त नमाज़ सुन्नते गैर मुअक्किदा हैं और फर्ज़ों के बाद दो रकअ़त नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा है। यानी पाँचों वक़्त की नमाज़ों में बारह रकअतें सुन्नते मुअक्किदा हैं और आठ रकअ़तें सुन्नते गैर मुअक्किदा हैं।

प्रश्नः एक शख़्स ने अपनी बीवी का महर अदा नहीं किया है लेकिन वह हज का इरादा रखता है और हाल यह है कि अगर महर अदा करे तो हज नहीं कर सकेगा ऐसी सूरत में वह क्या करे?

उत्तरः ऐसे शख़्स को चाहिए कि पहले महर अदा करे, फिर वुसअत हो तो हज करे वरना आइन्दा इस की तैयारी करे लेकिन अगर बीवी से कुछ मुद्दत के लिए महर अदा करने की मुहलत ले ले तो इस की गुन्जाइश है और हज अदा करने के बाद महर अदा करने की कोशिश करे।

(गुनीयतुन्नासिकः20)

प्रश्नः अगर किसी पर हज फर्ज़ न हो और रमज़ान में उमरा के लिए जाये और शव्वाल के महीने में मक्का मुकर्रमा में रह कर एक दो उमरा मजीद कर ले फिर वतन वापस आ जाये ऐसे शख़्स के लिए शरीअत का क्या हुक्म है?

उत्तरः जिस शख़्स पर हज फर्ज़ न हो और वह रमज़ान में उमरा के लिए मक्का मुकर्रमा पहुंच गया हो, ईदुल फित्र के बाद मक्का मुकर्रमा में हो और उमरा कर लिया हो तो उस पर उस वक़्त हज फर्ज़ होता है, जबकि उस के पास हज के दिनों तक क़ियाम की इजाज़त और मसारिफ व अस्बाब मौजूद हों वरना हज

फर्ज़ नहीं होगा।

(जुबदतुल मनासिकः 21)

प्रश्नः हज फर्ज़ होने का वक़्त कब होता है? हज का फार्म भरते वक़्त या शव्वाल में या हज के दिनों में बाज़ लोग रमज़ान में इस्तिताअ़ते हज के लाइक़ हो जाते हैं लेकिन उस साल फार्म न भरने की वजह से हज पर नहीं जा पाते हैं और आइन्दा रमज़ान से क़ब्ल इन्तिक़ाल कर जाते हैं, क्या ऐसे लोग तारिके हज में शुमार होंगे और गुनहगार होंगे?

उत्तरः हज के महीने यानी शव्वाल, जीक़ादा और जिल्हिज के दस दिन में जिस शख़्स के पास हज में जाने की इस्तिताअत हो, उस पर हज फर्ज़ होता है, उससे क़ब्ल नहीं, अगर किसी ने कोशिश की लेकिन वह हज पर नहीं जा सका और उसकी वफ़ात हो गई तो वह गुनहगार नहीं होगा, अलबत्ता उस पर हज की वसीयत जरूरी है ताकि उसकी वफ़ात के बाद उसके माले मतरूका से हज कराया जा सके।

(सुन्ने इब्ने माजाः 2/207)

प्रश्नः एक शख़्स के ऊपर कर्ज़ है और वह हज करना चाहता है, सवाल यह है कि वह पहले हज करे या कर्ज़ अदा करे, कर्ज़ अदा करने का इरादा है लेकिन अदा न करके वह हज पर चला जाये, तो क्या उसका हज अदा हो जायेगा?

उत्तरः बेहतर तो यही है कि पहले कर्ज़ अदा करे, उसके बाद हज अदा करे लेकिन अगर कोई कर्ज़ अदा किये बगैर सफरे हज़ पर रवाना हो जाये और हज अदा करे तो हज अदा हो जायेगा और वह फर्ज़ीयत हज से सुबुकदोश हो जाएगा, लेकिन याद रहे कि ऐसा करना कराहत से खाली नहीं। फतावा क़ाज़ी खाँ में यह सराहत मौजूद है कि जिसके पास इतना माल हो कि वह कर्ज़ अदा कर सके तो पहले कर्ज़ अदा करे, पहले हज न करे, अगर हज पर चला जाये और उस पर कर्ज़ बाक़ी रहे तो यह मकरूह है।

(फतावा क़ाज़ी खाँः1/313)

प्रश्नः एक शख़्स के पास इतना माल नहीं है कि वह हज कर सके लेकिन हज का बे इन्तिहा शौक़ है, उसके लिए वह कर्ज़ लेने के लिए तैयार है ताकि हज की सआदत हासिल करे, सुवाल यह है कि हज फर्ज़ न हो उसके बावजूद कर्ज़ ले कर हज पर जाने से हज अदा हो जायेगा या नहीं?

उत्तरः जब हज की इस्तिताअत न हो तो कर्ज़ ले कर हज पर जाना अ़क़्लमन्दी नहीं है, कर्ज़ से बचने की हर मुम्किन कोशिश करनी चाहिए और इस्तिताअत की दुआ करते रहना चाहिए फिर भी अगर कोई कर्ज़ ले कर हज कर ले तो हज अदा हो जायेगा।

(गुनीयतुन्नासिकः 33)

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आचार-व्यवहार

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

न्याय व इन्साफ़ः—

(1). एक बार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम माले ग़नीमत (युद्ध में प्राप्त वस्तु) बांट रहे थे, आसपास लोगों की भीड़ थी। एक आदमी आ कर आपके मुँह के पास लद गया। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में एक पतली सी लकड़ी थी, आप सल्ल0 ने उसी से उसको टहूका दिया, लकड़ी का सिरा उसके मुँह में लग गया और मुँह छिल गया। उसी समय आपने कहा ''तुम मुझसे बदला लो''। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने क्षमा कर दिया।

(सीरतुन्नबी)

(2). हज़रत अबू हदरद असलमी रज़ि0 पर एक यहूदी का कर्ज़ था। उनके पास (उनके शरीर पर) एक लुंगी और एक पगड़ी के अतिरिक्त कुछ न था। यहूदी तकाज़े के लिए आया था और कुछ भी मोहलत देने को तैयार न था। यहूदी हज़रत अबू हदरद रज़ि0 को ले कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आया। अबू हदरद रज़ि0 के पास कुछ होता तब तो कर्ज़ अदा करते। अतः आप सल्ल0 ने अपनी लुंगी उस यहूदी को कर्ज़ अदा करने हेतु दे दी और सर से अपना अमामा (पगड़ी) उतार कर कमर से लपेट लिया। (सीरतुन्नबी)

समता और बराबरीः—

सहचर (सहाबा) जब कोई काम करते तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ शामिल हो जाते और आम आदमी की तरह काम करते। जब मस्जिद—ए—नबवी का निर्माण हो रहा था तो उस समय भी आप सबके साथ काम में लगे हुए थे। ईंट—गारा उठा कर लाते थे। ख़न्दक युद्ध के अवसर पर भी ख़न्दक़ की खुदाई में लगे हुए थे, यहां तक कि आपके पेट पर मिट्टी और ख़ाक की तह जम गई थी।

एक यात्रा में खाना बनाने की आवश्यकता आन पड़ी तो दूसरों के साथ आप सल्ल0 भी लग गए। सहाबा ने कहा भी कि आप कष्ट न उठाएं, हम स्वयं कर लेंगे। आपने कहा, हाँ! ये सच है लेकिन मुझे ये पसन्द नहीं कि मैं तुमसे अपने को विशेष दिखाऊँ, अल्लाह उस बन्दे को पसन्द नहीं करता जो अपने साथियों में विशिष्ट बनने की चेष्टा करे।

(उस्व—ए—रसूल व सीरतुन्नबी)

दानशीलताः—

एक बार एक व्यक्ति पवित्र सेवा में उपस्थित हुआ और देखा कि दूर—दूर तक आपकी बकरियों का गल्ला फैला हुआ है, वह आप से ये

मांग बैठा। आपने उसको सारी बकरियां दे दीं। उसने अपने क़बीले में जा कर लोगों से कहा कि ''इस्लाम कुबूल कर लो, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे दानशील और देने वाले हैं कि निर्धन हो जाने की चिन्ता नहीं करते।''

आपकी दानशीलता का ये हाल था कि जो कोई भी आपके पास आता अगर आपके पास कुछ भी होता तो उसको कुछ न कुछ ज़रूर देते अन्यथा वादा कर लेते। इस कारण लोग इतने निडर हो गए थे कि एक बार ठीक नमाज़ खड़ी होने के समय एक देहाती आया और आपका दामन पकड़ कर कहा कि मेरी एक मामूली सी ज़रूरत पूरी नहीं हो पाई है, डर है कि मैं भूल जाऊँ, इसलिए उसको अभी पूरी कर दीजिए। अतः आप उसको साथ ले गए और उसकी ज़रूरत पूरी करके आए तो नमाज़ पढ़ी।

त्याग व बलिदानः-

एक बार एक आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। रात को भोजन के लिए घर में केवल बकरी का थोड़ा सा दूध था, वह आपने उसको दे दिया और सारी रात आप और आपके घर वाले भूखे रहे जबकि इससे पहले वाली रात में भी आप सल्ल0 का परिवार भूखा ही सोया था।

एक बार एक महिला ने आप सल्ल0 को एक चादर भेंट की। आपको चादर की आवश्यकता भी थी। एक व्यक्ति आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा कि क्या खूब चादर है! आपने उसी क्षण चादर उतार कर उसको दे दी। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ कर चले गये तो लोगों ने उस व्यक्ति से कहा कि तुम्हें मालूम भी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चादर की ज़रूरत थी? और तुम्हें ये भी मालूम होना चाहिए कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी मांगने वाले को मना नहीं करते। उसने कहा, हाँ लेकिन मैंने तो बरकत के लिए चादर ली है ताकि मुझको उसी चादर का कफ़न दिया जाए।

एक सहाबी ने निकाह किया, वलीमे के लिए घर में कुछ न था, आप सल्ल0 ने उनसे कहा कि हज़रत आइशा रज़ि0 के पास जाओ और आटे की टोकरी मांग लाओ। सहाबी गए और ले आए तथा वलीमा किया, हालांकि आप सल्ल0 के घर में इसके अतिरिक्त शाम को खाने के लिए कुछ न था।

एक बार आप सल्ल0 के दामाद हज़रत अली रज़ि0 ने किसी चीज़ का आग्रह किया। आप सल्ल0 ने कहा कि ये नहीं हो सकता कि मैं तुमको दे दूँ और अहले सुफ्फा (जो लोग एक चबूतरे पर पड़े रहते थे और अल्लाह

की याद में लीन रहते थे) को इस हाल में छोड़ दूँ कि वह भूख के मारे अपने पेट लिए फिरें। (सीरतुन्नबी)

अतिथि सत्कारः–

जिस व्यक्तित्व के भीतर दया, त्याग बलिदान की विशेषताएं पूर्णतः मौजूद हों, उसके अन्दर आतिथ्य के भी गुण ज़रूर होंगे। अतः कभी ऐसा होता कि आप सल्ल0 के पास मेहमान आ जाते और घर में जो कुछ होता मेहमानों के सुपुर्द हो जाता और घर वाले भूखे सो जाते। आप सल्ल0 रातों को उठ–उठ कर मेहमानों का हाल–चाल लेते रहते। मेहमान नवाज़ी और आतिथ्य में मुस्लिम गैर–मुस्लिम में भेद न था। हर प्रकार के लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मेहमान होते और आप सल्ल0 उन सबका समान रूप से अतिथि सत्कार करते। जब हब्शा (यथोपिया) वालों का एक प्रतिनिधि मण्डल आया तो आप सल्ल0 ने स्वयं अपने यहां उस प्रतिनिधि मण्डल को उतारा और उनकी सेवा की। एक बार एक गैर मुस्लिम मेहमान बना। आप सल्ल0 ने एक बकरी मंगवाई, वह भी नाकाफ़ी हो गई। इस प्रकार सात बकरियों तक नौबत आई और जब तक वह तृप्त न हो गया पिलाते रहे।

संयमताः–

एक बार एक दहकानी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। आप सल्ल0 मस्जिद में थे। उस देहाती को पेशाब की हाजत हुई। वह मस्जिद की पावनता से परिचित न था। वहीं खड़े–खड़े पेशाब करने लगा। लोग चहुँओर से दौड़ पड़े ताकि उसे दण्ड दें। आप सल्ल0 ने कहा, जाने दो पानी का डोल बहा दो, अल्लाह ने तुमको दुश्वारी पैदा करने के लिए नहीं बल्कि आसानी के लिए भेजा है। (सीरतुन्नबी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 का बयान है कि आप सल्ल0 के पवित्र स्वभाव में था कि हम लोगों के साथ मस्जिद में बैठ जाते और हम लोगों से बातें करते, जब उठ कर घर जाते तो हम लोग भी चले जाते। स्वभावानुसार एक दिन मस्जिद से निकल रहे थे कि एक देहाती आ गया और उसने आप सल्ल0 की चादर इस ज़ोर से पकड़ कर खींची कि आप सल्ल0 की गर्दन लाल हो गई। आप सल्ल0 न मुड़ कर उसकी ओर देखा। वह बोला कि मेरे ऊँटों को गल्ले से लाद दे, तेरे पास जो माल है वह न तेरा है न तेरे बाप का है। आप सल्ल0 ने कहा, पहले मेरी गर्दन का बदला दो तब गल्ला दिया जाएगा। वह बार–बार कहता है कि मैं कदापि बदला न दूंगा। आप सल्ल0 ने उसके ऊँटों पर जौ और खजूरें लदवा दीं और मन मुटाव न रखा।

(रहमतुल लिल आलमीन व सीरतुन्नबी)

❖❖❖

मुसलमान बच्चों और बच्चियों की दीनी तालीम की फ़िक्र

–मौलाना सय्यिद मुहम्मदुल हसनी रह0

एक मुसलमान के लिए मआ़श का मसअला, जीविका का प्रश्न, नौकरी और कारोबार का प्रश्न, इतना अहम नहीं, जितना उसके दीन व ईमान की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) की ज़रूरत है, और ईमान पर जीवन का अन्त हो, जहन्नम के अज़ाब से नजात, और जन्नत में दाखिल कैसे हो? यह एक बड़ा प्रश्न है जो सारे प्रश्नों से बढ़ कर है, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है "ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों, ख़ानदान वालों को आग के अज़ाब से बचाओ"।

लेकिन जहन्नम से नजात और जन्नत में दाख़िले का मसअला अक़ीदे व ईमान के सुधार और सत्यता से संबन्धित है। अक़ीदे व ईमान के सुधार और दीनी तालीम पर आधारित है, इस दृष्टि से देखिए तो मुसलमान बच्चों की तालीम की अहमियत हम पर पूरी स्पष्ट हो जाती है। इसकी ज़ियादा तफ़सील और व्याख्या की ज़रूरत नहीं, अब हमें यह देखना चाहिए कि क्या इस दीनी तालीम का निज़ाम प्रबंध हमारी मिल्लत में उचित रूप में मौजूद है या नहीं?

यदि हम इस देश की 25 साला (इस समय 72 साला) की तारीख़ का जायज़ा लें तो हमें अन्दाज़ा व अनुमान हो जायेगा कि सेक्युलर या सरकारी शिक्षा प्रणाली में इसकी कोई गुंजाइश नहीं, गुन्जाइश न हो तब भी कोई शिकायत की बात न थी। मुसीबत यह है कि जो निसाब तालीम पाठ्य क्रम बच्चों को पढ़ाया जा रहा है वह इस क़दर ज़हरीला, मुशरिकाना (अनेकेश्वरवादी) और हानिकारक है कि न सिर्फ़ हमें एक मुतवाज़ी समानान्तर शिक्षा प्रणाली का प्रबन्ध करना है बल्कि उस ज़हर का तिरयाक़ अवषधि भी मुहय्या (प्राप्त) करना है।

इस समय जो पाठ्य क्रम सरकारी स्कूलों में पढ़ाया जा रहा है वह ऐसा है कि जिसको पढ़ने के बाद कोई मुसलमान बच्चा (यदि वह केवल उसी पाठ्यक्रम पर निर्भरता करे) मुसलमान बाक़ी नहीं रह सकता। इसलिए उस पाठ्यक्रम पर निर्भरता करके बैठ जाना आत्म हत्या के अर्थ में है।

मौलिक और बुन्यादी बात जो इस पूरे मसअले में हमें तय करना है वह यह है कि ख़ुद हम मुसलमानों को इस अहम मसअले में क्या करना है? वास्तविकता में इस मुआ़मले के संबन्ध में बड़ा क़ुसूर मुसलमानों का है और सबसे ज़ियादा ज़िम्मेदारी भी मुसलमानों पर लागू होती है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि अपने तमाम मसाइल के साथ हम इस मसअले को भी हल करें और हर मुसलमान ख़ुवाह चाहे वह किसी भी विचार धारा बिरादरी, गाँव शहर से संबंधित हो इसमें भर पूर हिस्सा ले, और यह महसूस करे कि हालात कितने संगीन रुख इख़्तियार करने वाले हैं। और अगर वक़्त पर नोटिस न लिया गया और ध्यान न दिया गया तो ख़ुदानख़्वास्ता ऐसा वक़्त आएगा कि नई नस्ल अपनी तहज़ीब, सक़ाफ़त, सभ्यता, कल्चर, ज़बान से बिलकुल बेगाना और अपरिचित हो जाएगी।

दीनी तालीम का मसअला मुसलमानों के हर मकतब–ए–फ़िक्र विचार धारा के लोगों को आवाज़ दे रहा है कि वह अपने सारे इख़्तिलाफ़ात (मतभेद) को बालाए ताक़ (किनारे) करके इस अहम मसअले में यकसू एकाग्रचित हो जायें और एक मुतावाज़ी निज़ामे तालीम (समानान्तर) शिक्षा व्यवस्था का जाल बिछा दें जो उनको ग़ुलामी से छुटकारा दिला दे।

एक ज़िन्दा और जीवित क़ौम की हैसियत से हमें यह काम इससे पहले कर लेना होगा कि लगाम हमारे हाथों से जाती रहे और कफ़े अफ़सोस मलने के सिवा कुछ बाक़ी न रहे।

अब पछताए का होवत है जब चिड़याँ चुग गईं खेत।

जो जागत है वह पावत है।
जो सोवत है वह खोवत है।।
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई।
अब रैन कहां तू सोवत है।।

❖❖❖

जो दिलों को फत्ह ....

वर्णित किया है कि ''खुदा की मख्लूक़ खुदा का कुंबा है और अल्लाह की मख्लूक़ में अल्लाह को सबसे ज़ियादा महबूब वह है जो उसके कुंबे के साथ अच्छा सुलूक करता है'' (अल मोजम अल अवसत लित्तबरानी, हदीसः 5541) मुल्क के और दुन्या के मौजूदा हालात में यह बात ज़रूरी है कि मुसलमान वतनी भाईयों के सामने नैतिकता की श्रेष्ठता सिद्ध करें, और उनके हृदयों तथा मनों को जीत लेने का प्रयास करें, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल ज़मीन को विजय नहीं किया अपितु मनों को जीता और मस्तिष्कों पर शासन किया, हमारे लिए भी समस्याओं से उबरने का यही मार्ग है, अगर हम वतनी भाईयों के साथ अपने व्यवहार ठीक कर लें और अपने आचरणों के अनुकूल करलें तो निराशा की यह रात अवश्य समाप्त होगी और आशा की प्रभात अवश्य उदय होगी।

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

मुक़द्दिमा (प्राक्कथन)

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

नोटः *यह मुक़द्दिमा है, जनाब मौलाना सय्यिद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी की बहुमूल्य पुस्तिका* **''सहाबा का मुक़ाम व मर्तबा''** *का, अपने प्रिय पाठकों के दृष्टिगोचर हेतु हिन्दी लिपि में उसका भावार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है। (सम्पादक)*

अल्लाह तआला की प्रशंसा, महानता तथा अल्लाह के रसूल पर दुरूद व सलाम के पश्चात लिखते हैंः—

अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चमत्कारी जीवनी का जो भी प्रभाव इस्लाम स्वीकार करने पर पड़ा वह भूतपूर्व अंबिया अलै0 के यहां नहीं पाया जाता यह अल्लाह का निज़ाम है अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम नबी के चेहरे (मुखड़े) तथा नेत्रों में वह चमत्कारी प्रभाव रखा था जिसे कोई शुद्ध संकल्प से देखता और उसकी आत्मा तथा मन सच होता तो वह इस्लाम स्वीकार कर लेता फिर उस पर अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चमत्कारी दृष्टि पड़ते ही उसकी काया पलट हो जाती ऐसे ही लोगों को सहाबा कहा गया है अल्बत्ता सहाबा में श्रेणियां हैं हर एक को अपनी क्षमता के अनुकूल श्रेणी मिली है। परन्तु जिसकी आत्मा स्वच्छ न थी मन स्वच्छ न था उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भली निगाह से न देखा तो वह आप का विरोधी हो कर नास्तिक हो गया। अनेकेश्वरवादी हो गया और जिसने किसी दबाव से कपटी मन के साथ झुका था वह मुनाफिक हो गया।

अब बाज़ सहाबा के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अदभुत प्रेम की बातें लिखी जाती हैं।

हज़रत हस्सान रज़ि0 आपकी शान में अशआर में कहते हैं भावार्थ ''किसी आँख ने आप से ज़ियादा सुन्दर नहीं देखा और किसी औरत ने आप से ज़ियादा खूबसूरत को नहीं जना आप बे ऐब पैदा हुए आप वैसे पैदा किये गये जैसे आपने चाहा''।

फाँसी पर चढ़ाये जाने वाले सहाबी से पूछा जा रहा है बताओ तुम्हारे बदले में तुम्हारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रखा जाए तो तुम्हारी क्या राय होगी? वह उत्तर देते हैं ''मैं तो इसके लिए भी तैयार नहीं कि उनको काँटा चुभे और उसके बदले में मैं फाँसी से बच जाऊँ। जो व्यक्ति अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मिल लेता था वह महब्बत तथा प्रेम के उच्च पद पर पहुंच जाता था और उस की यह दशा हो जाती थी कि मनुष्य में किसी पर

निछावार होने की जो उत्तम परिस्थिति हो सकती है वह उसमें उत्पन्न हो जाती थी। तलवार से क़त्ल करने का इरादा है और नज़र पड़ गई आपके पुरनूर चेहरे पर तो हाथ से तलवार गिर जाती है। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तलवार हाथ में ले लेते हैं और उसको मुआफ फरमा देते हैं।

हज़रत उमर रज़ि0 का वाकिआ़ है कि तलवार ले कर क़त्ल के इरादे से निकले, बहन बहनोइ के यहां कुर्आन मजीद सुन कर बिल्कुल पलट गए, वहां से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए, सहाबा डर रहे थे कि उमर जैसा सख़्त दिल आ गया है, अल्लाह ही ख़ैर करे। हज़रत उमर रज़ि0 से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कैसे आना हुआ? उन्होंने अर्ज़ किया कि आये थे किसी और उद्देश्य से परन्तु अब इस्लाम स्वीकार करना है। ऐसे कितने वाक़िआत हैं, हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 का वाक़िआ है वह कहते हैं मेरे निकट सबसे घृणित व्यक्ति आप थे प्रन्तु अब सब से अधिक प्रिय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। इसी प्रकार हज़रत ''हिन्दा'' वालिदा हजरत मुआविया रज़ि0 का वाक़िया सीरत की किताबों में लिखा है और सहीह बुखारी में भी वर्णित है उन्होंने बैअत की और जो बातें कहीं जा रही थीं, उस पर वह आशंका प्रकट करतीं मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्षमा फरमाते रहे, और बैअत मुकम्मल होने के बाद उनका हाल यह हो गया कि वह कहती हैं ''आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप का खेमा मेरे लिए सबसे घृणित था परन्तु अब सबसे प्रिय है।

हज़रत अबू महजूरा रज़ि0 हज़रत फज़ाला बिन उबैदा रज़ि0 का वाकिआ और दूसरे सहाबा के वाक़िआत भी हैं। जिनसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कारी प्रभाव को भली भांति समझा जा सकता है।

जो लोग शुरुअ ही से साथ थे, घर का साथ और जिन का घर के बाहर का साथ था, उन पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कैसी छाप रही होगी? अहले बैते किराम (घर के लोगों) को यह दोहरी निसबत हासिल थी कि वह सहाबी होने का सम्मान भी रखते थे और घर के होने का भी शरफ रखते थे।

हज़रत अली मुर्तजा रज़ि0 तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर ही में पले बढ़े थे और आपके दामाद भी हुए, और इससे बढ़ कर जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा में मुहाजिरीन और अन्सार में भाई चारा कराया तो हज़रत अली को अपना भाई बताया और वह सदैव आपको प्रिय रहे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से

व्यवहार की प्रक्रिया भी आश्चर्यजनक थी नुबूवत से पहले ही वह उनके गहरे मित्र थे। वह जितना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे, उतना साथ किसी और को प्राप्त नहीं हुआ। उनका स्वभाव नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलता जुलता था। हज़रत उमर रज़ि0 को अल्लाह तआला ने बाज वह विशेषताएं प्रदान की थीं जिनमें उन को प्रमुखता प्राप्त थी अतएव हज़रत अबू बक्र के लिए, हज़रत उमर रज़ि को खलीफा नियुक्त करने में कोई आपत्ति न हुई यद्यपि हज़रत अबू बक्र रज़ि0 बहुत ही नम्र स्वभाव के थे और हज़रत उमर रज़ि0 दीनी बातों में बड़े कठोर मन के थे।

हज़रत उस्मान रज़ि0 में लज्जा का गुण अत्यधिक था यहां तक कि फिरिश्ते भी उनकी लज्जा का ध्यान रखते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनके प्रेम की एक घटना बड़ी विचित्र है हुदैबिया की सन्धि के अवसर पर मक्के की परिस्थिति मालूम करने के लिए हज़रत उस्मान को मक्का भेजा गया, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा को हुदैबिया में रोक दिया गया था वह उस साल उमरा न कर सके। हज़रत उस्मान को मक्के में तवाफ की अनुमति दी गई परन्तु उन्होंने यह कह कर तवाफ न किया कि जब हमारे प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तवाफ से रोक दिया गया है तो मैं तवाफ कैसे करूँ और उन्होंने कहा कि मुझे जिस काम के लिए भेजा गया है वह करके वापस जाना है इस अवसर पर हुदैबिया में जब बैअ़ते रिजवान ली गई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि0 की बैअत गायबाना (अनुपस्थिति) तौर पर अपने ही एक हाथ से दूसरे हाथ पर ली, यह गैर मामूली खुसूसीयत का मुआमला था।

हज़रत अली मुर्तजा रज़ि0 को शुरुअ दिन से आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा अथवा संगत में रहने और बाज़ महत्वपूर्ण अवसरों पर प्रतिनिधित्व के अतिरिक्त, ज्ञान तथा बुद्धि में निपुण थे इन चारों महापुरुषों की विशेषताएं हदीस में इस प्रकार वर्णित हुई हैं—

''मेरी उम्मत में सबसे अधिक दयावान अबू बक्र हैं और अल्लाह के आदेशों के अमल में सब से कठोर उमर हैं और लज्जा में सबसे बढ़ कर उस्मान हैं और झगड़ों के फैसले में सबसे दक्ष अली हैं''। (अल्लाह इन सब से राज़ी हुआ)

हिजरत के समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बिस्तर पर हज़रत अली को धरोहरें सौंप कर छोड़ा और वह दुश्मनों के बीच अल्लाह पर भरोसा किये हुए ईमान का पहाड़ बने रहे और जिन जिन की धरोहरें थीं उनको पहुंचा दिया। ख़ैबर के अवसर पर

आप ने फरमाया कल मैं ऐसे व्यक्ति को झण्डा दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल को प्रिय है और दूसरे दिन झण्डा हज़रत अली रज़ि0 को प्रदान हुआ। सन् 9 हिजरी को हज में हज़रत अबू बक्र को अमीरे हज बनाया तो कुछ अहम ऐलानात और हिदायात (घोषणा तथा निर्देश) के लिए हज़रत अली को भेजा और उससे पहले बद्र के अवसर पर यद्यपि हज़रत अली आप को बहुत प्रिय थे फिर भी दुश्मन के मुकाबले में हज़रत अली को भेजा, हज़रत अली ने बड़ी वीरता के साथ दुश्मन को प्राजित किया।

हुदैबिया संधि के अवसर पर परिस्थिति बड़ी विस्मय जनक थी और हुदैबिया की संधि यद्यपि दब कर की गई लेकिन उससे विजय का मार्ग खुला उस संधि को पवित्र कुर्आन में खुली हुई विजय कहा गया है। अनुवादः *''निश्चय ही हमने तुम्हारे लिए एक खुली विजय प्रकट की''। (अल–फत्हः)*

इतनी बड़ी संख्या डेढ़ दो साल के समय में ईमान लाई जो बीते हुए इस्लामिक काम में ईमान न ला सकी थी। और उससे इस्लाम को ऐसे मर्दे मोमिन तथा मर्दे मुजाहिद अपने को दीन पर निछावर करने वाले मिले जिन्होंने इस्लाम की असाधारण तथा विजय युक्त सेवा की उनमें हज़रत खालिद बिन वलीद तथा हज़रत अम्र बिन अल–आस रज़ि0 का नाम लेना प्रयाप्त है। जिनकी सेवाएं किसी से छिपी नहीं हैं।

हुदैबिया संधि ही के अवसर पर मक्के वालों ने वह दृश्य देखा जो साधारणतः देखने में नहीं आता। अल्लाह के नबी जब थूकते थे तो सहाबा उनके थूक को हाथों में ले कर अपने मुंह पर मल लेते, मक्के वालों ने वापस जा कर अपने लोगों में यह दृश्य बयान किया, सहाबा की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम का अद्वितीय उदाहरण था। यह और इसी तरह के और उदाहरण हैं जिनसे सहाबा का हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अत्यधिक प्रेम सिद्ध होता है। वास्तव में सहाबा की जमाअत अल्लाह की ओर से तैयार की गई थी। इस लिए कि अन्तिम नबी के पश्चात उनसे नबियों का काम लिया जाना था। वह उस सत्य संदेश (पैग़ामे हक़) को जो उनको उनके प्रिय नबी से मिला उसको पूरी निष्ठा के साथ दूसरों तक पहुंचाएं। अल्लाह तआला जिस को नबी बनाता है उसको मानव तथा मानवता का उत्तम पद प्रदान करता है। अल्लाह तआला ने जब सहाबा को नबी का काम सौंपा तो सहाबा का स्वभाव और दियानतदारी (सत्य निष्ठा) उसके अनुकूल प्रदान की।

नबी काल में जिन लोगों में सहाबा का गुण नहीं पैदा हुआ उनसे दीन के प्रसारण का काम भी नहीं लिया गया और उनको जानने वाले सहाबा ने जाना

और पहचाना, नास्तिक हों या मुनाफिक उनके स्वभाव से उनको पहचाना गया।

जहां तक मक्का विजय के अवसर पर ब जाहिर (देखने में) दबाव से इस्लाम लाने वालों का संबन्ध है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तालीफे क़ल्ब (मन में इस्लाम से प्रेम बढ़ाने) के लिए भारी मात्रा में धन तथा दूसरी सामग्रियां ऊँट आदि प्रदान कीं और उन लोगों को अपना प्रेमी बना लिया और इतनी व्यापक क्षमा का वातावरण बनाया कि युद्ध की परिस्थिति मानवता में परिवर्तित हो गई, और लोगों को बहाने बहाने से क्षमा प्रदान की, उन लोगों को भी क्षमा दी जो सदैव विरोध करते रहे। इस प्रकार इस अवसर पर एक बड़ी संख्या सहाबा के पद से सम्मानित हुई, इसी मक्का विजय के अवसर पर एक अंसारी सहाबी जिनके हाथ में झण्डा था उन्होंने कह दिया कि ''आज क़त्ल व किताल (मारने काटने) का दिन है'' तो उनसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झण्डा ले कर उनके बेटे हज़रत क़ैस बिन सअ़द बिन उबादा रज़ि0 को झण्डा दे कर फरमाया ''आज का दिन तो दया तथा कृपा का दिन है''।

फिर उन सब ने जो कुछ उनसे भूल चूक हुई थी उसको मिटाने के लिए और भुलाने के लिए इस्लाम की खिदमत में बड़े अच्छे अच्छे काम किये और अल्लाह का कल्मा ऊँचा करने में ऐसे काम किए कि उनसे अल्लाह और उसका रसूल दोनों राजी हो गए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के पश्चात उनमें के बाज ने ऐसे कारनामे अंजाम दिये कि उनके नाम इस्लामिक इतिहास में सम्मान के साथ अंकित हैं। हज़रत इकरमा बिन अबी जहल और हज़रत वहशी बिन हर्ब रज़ि0। हज़रत वहशी रज़ि0 जो हज़रत सय्यिदना हम्ज़ा रज़ि0 को शहीद करने के नतीजे में आपका सामना करने में शर्म महसूस करते थे कि आप को अपने चचा की याद आ जाये और उनके लिए कहीं नुक्सान का सबब न बन जाए। इसी प्रकार अबू जहल की दुश्मनी भी प्रत्यक्ष है और इकरमा उनके बेटे थे लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दोनों के इस्लाम लाने का स्वागत किया और कहा यह अल्लाह का मुआमला है वह जिसे चाहे हिदायत दे और उसे सम्मान दे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''मेरे सहाबा को बुरा मत कहो'' और फरमाया ''मेरे अस्हाब के बारे में अल्लाह से डरो और मेरे बाद उनसे बुग्ज व अदावत (शत्रुता) न रखना''।

अल्लाह तआला ने सहाबा की तारीफ पवित्र कुर्आन में सूरे फत्ह के अन्त में तथा दूसरी आयात में भी फरमाया है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को उनकी हिजरत से रोका गया फिर उनकी हिजरत को हुजूर की हिजरत से जोड़ा गया और उस हिजरत के सफर के शुरुअ में जब मक्का मुकर्रमा की आबादी से निकल कर सौर पहाड़ की गुफा में जो पहाड़ के ऊपरी भाग में है, दोनों हज़रात उस गुफा में आराम कर रहे थे जब उनकी तालाश में वहां दुश्मन पहुंच गए और गार से उनके पैर दिखाई देने लगे तो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को कुछ शंका का आभास होने लगा तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको सांत्वना दी जिस का वर्णन अल्लाह तआला ने अबू बक्र को हुजूर का साहिब (साथी) बता कर किया है ''जब अपने रफीक़ (साथी) से कह रहे थे कि चिन्ता मत करो निःसंदेह अल्लाह हमारे साथ है''। ''चिन्ता मत करो'' के स्थान पर दुखी मत हो भी कहा जा सकता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने अन्तिम समय में बीमार थे, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को जोर दे कर नमाज़ की इमामत में अपना नाइब बनाया, जिसे हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 उनकी खिलाफते नुबूवत की बड़ी दलील समझते थे, और फरमाते थे कि जब दीनी उमूर (कामों) में सबसे महत्वपूर्ण कार्य नमाज़ में उनको हमारा इमाम बनाया गया तो उसके बाद की चीज़ दुन्यावी कामों में भी इमामत के वही हक़दार (अधिकारी) हुए। जिसको हम सब ने खुशी खुशी माना। हज़रत अबू बक्र की बेटी उम्मुल–मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 पर शुब्हा करने पर अल्लाह तआला ने अपनी ओर से उनकी बराअत (पाप से दूरी) पवित्र कुर्आन में वर्णित करके उनकी सफाई, पवित्रता तथा सतीत्तव पर मुहर लगा दी, और उनको तथा हुजूर की दूसरी पत्नियों को मुसलमानों की माएं बताया तथा पवित्र कुर्आन में फरमाया, अनुवाद ''नबी का मोमिनों पर उनकी जानों से ज़ियादा हक़ है, और आपकी बीवियां उनकी माएं हैं''।

(अल–अहजाबः 6)

और एक दूसरी जगह उनकी सिफात व खुसूसियात (विशेषताओं) का तज़्किरा उनसे एक खिताब (संबोधन) में इस तरह फरमाया, अनुवाद ''ऐ अहले बैत अल्लाह यही चाहता है कि तुम से मैल कुचैल को दूर कर दे और तुम्हें पूरी तरह पाक साफ कर दे''।

(अल–अहज़ाबः33)

इससे आगे बढ़ कर श्रेष्ठता की ओर संकेत किया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी चहेती बेटी हज़रत फातिमा रज़ि0 और हज़रत अली रज़ि0 और उनके दोनों बेटों हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ि0 को भी अपने घर वालों की विशेषता में सम्मिलित किया और इन हजरात के संबन्ध में प्रेम तथा संबंध के इज़्हार के साथ उनकी श्रेष्ठता व्यक्त

करने वाली बातें भी वर्णित कीं जो हदीस तथा सीरत की किताबों में अंकित हैं।

सहा—बए—किराम रज़ि0 की श्रेष्ठता की यह बात भी है कि वह शरीअत के आदेश जैसे जैसे उतरते जाते थे वह उनको उसी तरह अपनाते जाते थे। और अगर उनमें कुछ चूक हो जाती तो व्याकुल हो जाते और जब तक उसकी सफाई न कर लेते तब तक उनको सुकून न मिलता, अल्लाह तआला फरमाता है, अनुवाद ''मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वह इन्कारियों पर ज़ोर आवर हैं आपस में मेहरबान हैं, आप उन्हें रुकूअ़ और सज्दे करते देखेंगे। वह अल्लाह का फज़्ल और खुशनूदी चाहते हैं, उनकी अलामतें सज्दों के असर से उनके चेहरों पर नुमायां हैं, उनकी यह मिसाल तौरात में है और इन्जील में, उनकी मिसाल यह है जैसे खेती हो जिसने अंखवा निकाला फिर उसको मज़बूत किया फिर वह मोटा हुआ फिर अपने तने पर खड़ा हो गया। खेती करने वालों को भाने लगा ताकि वह उनसे इन्कार करने वालों को झल्ला दे, उनमें से जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनसे अल्लाह ने मग़फिरत और अज्रे अज़ीम का वादा कर रखा है''।

(अल—फत्ह:29)

इन आयात में सहा—बए—किराम रज़ि0 का यह ऊँचा मुकाम बताया गया है, वहीं पवित्र कुर्आन में जगह जगह उनमें शामिल होने वालों का हाल भी बताया गया है। जो जाहिर में अपने को मुसलमान और अपने को सहाबा में से बताते थे और इस तरह मुसलमानों को जो फाइदा पहुंचता था उसमें वह अपने को शरीक कर लेते थे लेकिन उनका व्यवहार सहाबा के विरुद्ध था उनके विषय में ''मुनाफिकून'' (जाहिर में मुसलमान अन्दर से इस्लाम विरोधी) और ''खादिऊन'' (धेखा देने वाले, कपटी के शब्द आये हैं। जाहिर में उनके साथ भला व्यवहार किया जाता था।

और आखिरी दर्जे का अख्लाक़ बरता गया लेकिन यह आयत उतरी कि अल्लाह तआला उनको बख्शे गा नहीं। यह लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद भी रहे अल्बत्ता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न हज़रत हुजैफ़ा बिन अल—यमान रज़ि0 को निशांदिही फरमा दी थी, अर्थात उन मुनाफिकों के नाम बता दिये थे हज़रत उमर रज़ि0 ने जिन लोगों को जिम्मेदारी के कामों पर लगाया तो हज़रत हुज़ैफ़ा से पूछा कि जिन लोगों को मैंने जिम्मेदारी सौंपी है उनमें कोई मुनाफिक तो नहीं है? उन्होंने उत्तर में किसी का नाम लिये बिना कहा एक व्यक्ति उनमें से है, जिसे हज़रत उमर रज़ि0 ने अपनी फिरासत (बुद्धिमता) से काम लेते हुए उन्हें माजूल (पदच्युक्त) कर दिया।

जहां तक सहाबा रज़ि0 के परस्पर मतभेद की बात है, उससे फिक्ह तथा मसाइल की बड़ी राहें खुलती हैं, और इस्लाम जिसे पूरी दुन्या तक पहुंचना था और जिसे कियामत तक का मज़हब करार दिया गया था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''ला नबीय बअ़दी'' (मेरे बाद कोई नबी नहीं है) और अल्लाह तआला ने फरमाया–

अनुवाद ''हमने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तमाम जहानों के लिए रहमत (दया) बना कर भेजा है'' और दूसरी जगह आपको ''खातमन्नबीयीन'' (नबियों के खत्म पर) भी कहा (अल–अहजाबः 40) और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आप ने सहाबा को नबूवत व दावत का काम सौंपा, इस्लाम दीन के एतिबार से मुकम्मल हो गया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का देहान्त हो गया और सहाबा इस मिशन को आगे बढ़ाने और दीन व शरीअत को नाफिज़ (प्रचलित) करने में लग गये। इस तरह हुजूर की बैअ़त बेअ़सत मकरूना यानी आपकी बेअ़सत (प्रेषण) उम्मत की बेअ़सत से मिली हुई है और उम्मत में सर्व प्रथम सहाबा हैं। आपके साथ आप की उम्मत मबऊस की गई है तुम भलाई की तलकीन करते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो''।

(आले इमरानः 10)

जहाँ तक इसका तअल्लुक है कि सहाबा के मुख़्तलिफ मरातिब व दरजात हैं श्रेणियां हैं तो वह उनकी कुर्बानियों और सबक़त फिल–इस्लाम (इस्लाम लाने में पहल करना) ईमान व यकीन, इसार और अखलाक़ की बुलन्दी और आमाल के तफावुत (अंतर) से हैं। यह अल्लाह का फैसला है कि जिसके मुक़ाम को चाहे बुलन्द करे लेकिन सब से कम दर्जे के सहाबी की बराबरी बड़े से बड़ा वली जो सहाबी न हो, नहीं कर सकता। बड़े से बड़ा मुजाहिद और बड़े से बड़ा ताबिई यहां तक कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने का वह शख्स जिसने हुजूर का ज़माना तो पाया और ईमान भी लाया लेकिन हुजूर की खिदमत में हाज़िर न हो सका वह भी किसी कम से कम दर्जे के सहाबी की बराबरी नहीं कर सकता अर्थात अंबिया अलै0 के बाद कोई गैर सहाबी किसी कम से कम दर्जे के सहाबी के दर्जे को नहीं पा सकता।

यहां यह बात भी ध्यान में रहे कि अगर सभी एक ही मौके पर ईमान ले आते और एक ही हाल से गुज़रते या गलतियां न होतीं तो यह बात कुर्आन के उतरने से और शरीअत से टकराती, यहां तक कि इरतिदाद (दीन से फिर जाना) और उसके बाद फिर दीन इख़्तियार कर लेने पर मुआफी या ऐसी गलतियां जिन पर हद जारी होती है उनकी तन्फीज़

(जारी होना) यह सब बातें दीन के हित के भाग हैं। मगर वह सब सहाबा जिन से गलतियां हुईं और उनको सज़ायें मिलीं वह सब अल्लाह के यहां मक़्बूल और गैर सहाबी के मुक़ाबले में बहुत ऊँचा मुक़ाम रखते हैं। और जिन सहाबा को सत्ता मिली उन्होंने अपने शासन को कुर्आन और हदीस के अनुकूल चलाया। फिर भी वह बराबर डरते रहे कि कहीं भूल चूक तो नहीं हो रही है, हज़रत मुआविया रज़ि0 का भी यही हाल था। उन्होंने अपने को खलीफ–ए–राशिद के तौर पर नहीं पेश किया, अलबत्ता उनके शासन काल में अम्न तथा शांति रही। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी रहे। (हज़रत मुआविया रज़ि0 का शासन काल तीस वर्ष की ख़िलाफ़त के बाद का है इसलिए उनको खलीफ–ए–राशिद नहीं कहा गया। सम्पादक)

सहाबा और अहले बैत दोनों का अपना अपना मुक़ाम है, और उन हज़रात में परस्पर एक दूसरे के आदर सम्मान तथा प्रेम की बातें नज़र आती हैं। अहले सुन्नत वल–जमाअत ने दोनों के प्रेम तथा संबन्ध को जमा किया। लेकिन जिन्होंने एअ़तिदाल (संतुलन) का मार्ग छोड़ा वह नासबीयत और खारजीयत (हज़रत अली रज़ि0 और अहले बैत से दुश्मनी) या रफ्ज़ व शीअ़त, (आरंभ के तीनों खुलफा की दुश्मनी) की ओर चले गये और सत्यमार्ग से हट गये। ऐसी बातें मुख़्तलिफ हालात के नतीजे में बार बार सामने आती रहती हैं जिनके समाधान के लिए ''तवासी बिल–हक़्क़'' एक दूसरे को सत्य अपनाये रहने के निर्देश की प्रतिक्रिया आवश्यक होती है।

हमारे प्रिय मौलवी सय्यिद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी अल्लाह उनको सलामत रखे, को अल्लाह तआला ने बड़ी इल्मी, दीनी व दावती कामों की तौफीक़ दी है, उनके कलम से महत्वपूर्ण तथा लाभदायक पुस्तकें आ चुकी हैं। उन्हीं में एक लाभदायक, प्रभावकारी तथा शक्तिशाली रिसाला (पुस्तिका) जो सहाबा के मुक़ाम व मर्तबे के वर्णन में प्रयाप्त है। हमारे सामने है, जो अज़ीज़ी मौलवी सय्यिद महमूद हसन हसनी नदवी सल्लमहुल्लाह की किताब ''तारीखे इस्लाह व तरबीयत'' के हिस्सा सहाबा की खास जिल्द के मुकद्दिमे के तौर पर लिखा था। जिसे एक रिसाले के तौर पर शाये (प्रकाशित) करने की ज़रूरत समझते हुए मुस्तक़िल किताब के तौर पर पेश किया जा रहा है। अल्लाह तआला इसे अधिक से अधिक लाभदायक बनाये और स्वीकृत प्रदान करे।

आमीन।

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب.۹۳/، تیغورمارغ،
لکناؤ-۲۲۶۰۰۷ یوبی (الہند)

Date 09/09/2018

التاریخ ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

नीचे लिखे उर्दू जुम्ले पढ़ये, जहां जरूरत हो बाद में लिखे हिन्दी जुम्लों से मदद लीजिये:-

(۱) ہم ہندوستان کے باشندے ہیں۔

(۲) ہماراوطن ہندوستان ہم کو بہت عزیز ہے۔

(۳) ہندوستان بہت بڑا ملک ہے۔

(۴) اس کی آبادی ایک ارب تیس کروڑ بتائی جاتی ہے۔

(۵) یہاں بہت سی زبانیں لکھی پڑھی اور بولی جاتی ہیں۔

(۶) یہاں بہت سے مذاہب والے ایک ساتھ رہتے ہیں۔

(۷) ہندو، مسلم، سکھ، عیسائی، جینی اور بودھی وغیرہ۔

(۸) یہاں سب مذہب والے اپنے اپنے مذہب پر رہتے ہوئے ایک دوسرے سے محبت کرتے ہیں۔

(۹) اللہ تعالیٰ ہمارے وطن کی ہر طرح حفاظت فرمائے۔

(۱۰) اللہ تعالیٰ تمام ہندوستانیوں میں میل و محبت اور اتحاد قائم رکھے۔

(1) हम हिन्दोस्तान के बाशिन्दे हैं।

(2) हमारा वतन हिन्दोस्तान हम को बहुत अ़ज़ीज़ है।

(3) हिन्दोस्तान बहुत बड़ा मुल्क है।

(4) उसकी आबादी एक अरब तीस करोड़ बताई जाती है।

(5) यहां बहुत सी ज़ुबानें लिखी पढ़ी और बोली जाती हैं।

(6) यहां बहुत से मज़ाहिब वाले एक साथ रहते हैं।

(7) हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैनी और बौद्धी वग़ैरह।

(8) यहां सब मज़हब वाले अपने अपने मज़हब पर रहते हुए एक दूसरे से मह़ब्बत करते हैं।

(9) अल्लाह तआ़ला हमारे वतन की हर तरह ह़िफाज़त फरमाये।

(10) अल्लाह तआ़ला तमाम हिन्दोस्तानियों में मेल व मह़ब्बत व इत्तेहाद क़ाइम रखे।